केशव संवाद

ISSN No. 2581-3528

अंक : 1 जून-2026 RNI No. UPHIN/2000/03766 ₹ : 20

पर्यावरण संरक्षण समय की पुकार

धर्मांतरण समाज के लिए चुनौती

कथन

सामाजिक समरसता के संदर्भ में, बाबासाहब आंबेडकर द्वारा संविधान सभा में दिए गए समापन भाषण का एक महत्वपूर्ण संदेश, सदैव प्रासंगिक रहेगा। बाबासाहब ने कहा था कि सामाजिक प्रजातन्त्र एक ऐसी जीवन पद्धति है जो स्वतन्त्रता, समानता और बंधुता को मूलभूत सिद्धांतों के रूप में अपनाती है। गाँव समृद्ध तो देश समृद्ध। किसी को भी शोषित और वंचित की मानसिकता के साथ नहीं जीना चाहिए। हम सभी देशवासी एक हैं। हम सब को मिलकर काम करना होगा। **– द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति**

यमुनोत्री, गंगोत्री, बाबा केदारनाथ, बद्रीनाथ धाम की यात्रा भी शुरू होने जा रही है। इस पवित्र समय का, देश के कोटि–कोटि आस्थावान, श्रद्धाभाव से इंतज़ार करते हैं। मैं पंच बद्री, पंच केदार, पंच प्रयाग और यहां के आराध्य देवों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं। मैं संतला माता को भी नमन करता हूं। यहां आने से पहले मुझे, मां डाट काली के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। देहरादून शहर पर, मां डाट काली की बड़ी कृपा है। दिल्ली–देहरादून इकनॉमिक कॉरिडोर के इतने बड़े प्रोजेक्ट को पूरा करने में, माता डाट काली का आशीर्वाद बहुत बड़ी शक्ति रहा है। **– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

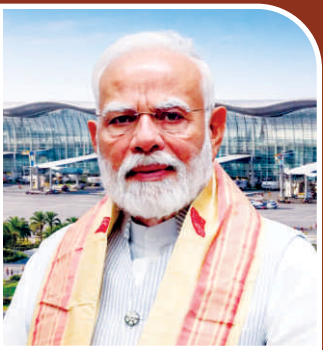

मंदिर श्री राम जी की इच्छा से बना, जब तक सबकी लकड़ी नहीं लगती, गोवर्धन नहीं उठता। उनकी करांगुली तब तक काम नहीं करती, जब तक बाकी लोग लकड़ी नहीं लगाते। मंदिर भी ऐसे ही बना। राम मंदिर में भारतवर्ष के एक–एक व्यक्ति की लकड़ी लगी है। अब विश्व को धर्म देने वाला भारत खड़ा होना है। राम मंदिर बनने तक 'हिन्दुस्तान हिन्दू राष्ट्र है' कहने पर हंसने वाले लोग थे। आज हंसने वाले लोग ही कह रहे हैं कि हिन्दुस्तान हिन्दुओं का देश है। हमको कहते है कि आप घोषित करो। हम कहते है घोषित करवाने की जरूरत नहीं, जो है सो है। सूरज पूरब से उगता है, ये घोषित करना चाहिए क्या? वह पूरब से ही उगता है। तो भारत हिन्दू राष्ट्र है, यह आज सबको मान्य है। **–डॉ. मोहन भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व.संघ**

विवेकहीन ज्ञान अहंकार और दंभ को जन्म देता है, जबकि विवेकयुक्त ज्ञान ही वास्तविक कल्याणकारी होता है। यह विचार आज के "डेटा–ड्राईवेन" युग में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ जानकारी की अधिकता है, परंतु उसके सही उपयोग के लिए आवश्यक नैतिक मार्गदर्शन का अभाव दिखाई देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय, नैतिक तकनीक, प्रकृति के सम्मान और भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राविवेक (wisdom) की प्रखर भूमिका है

–दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ

बच्चों और युवाओं दोनों को सोशल मीडिया के खतरों के बारे में सतर्क रहना चाहिए। रील बनाने और खतरनाक स्टंट करने की होड़ जानलेवा हो सकती है। इसलिए युवाओं को रील की जगह रियल लाइफ चुननी चाहिए। अभिभावकों को भी रोजाना बच्चों से बात करनी चाहिए, उनका मोबाइल इस्तेमाल देखना चाहिए और उन्हें खतरनाक स्टंट से दूर रहने की हिदायत देनी चाहिए।

–योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

1 जून, 2026

वर्ष : 26 अंक : 06

सलाहकार समिति

उदयभान सिंह, रविन्द्र कुमार चौहान
रविन्द्र कुमार श्रीवास्तव, मुकेश कुमार

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

प्रोफेसर (डॉ.) नीलम कुमारी

प्रबंध निदेशक

डॉ. अनिल कुमार निगम

प्रबंध संपादक

पंकज राणा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

बोलते न्यायालय.....05
धर्मांतरण गिरोह पर एटीएस की बड़ी कार्रवाई.....06
एक वैश्विक सांस्कृतिक पहचान के रूप में उभरा भारत.....08
'हिंदू समाज एकजुट हो' ट्रेंडिंग रहा.....09
भारतीय ज्ञान परम्परा का पुनर्जागरण एवं नवाचार.....10
सरसंघचालक -ध्येय वाक्य.....11
आनुषांगिक संगठन.....12
पंच परिवर्तन.....13
आत्मज्ञान एवं आत्मअनुशासन देता है योग.....14
मेघालय : सीमांत प्रदेश से सुरक्षा प्रहरी तक.....15
प्रेम के नाम पर जाल/पुरखों की विरासत की ओर.....17
उत्तर प्रदेश की सुर्खियां.....18
उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ.....19
एन सी आर के समाचार.....20
उत्तर प्रदेश के अनुकरणीय कार्य.....21
महान क्रांतिकारी.....22
वीरांगनाएं.....23
खेल समाचार.....24
युवा संवाद.....25
आत्मनिर्भरता के समाचार.....26
पुस्तक समीक्षा.....27
फिल्म समीक्षा.....28
एआई.....29
यंग अचीवर्स.....30
प्रेरक प्रसंग.....31
प्रेरक कहानी.....32
बाल कहानी/कविता.....33
पाठक कोना.....34

पाठकगण आपसे आग्रह है कि नीचे दिए गए **QR CODE** को स्कैन कर केशव संवाद पत्रिका के सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से भी जुड़े।

@keshavksamvad | @KeshavSamvad | @KeshavSamvad | @samvadkeshav

योग, प्रकृति और संस्कृति : विश्व को भारत का सनातन समाधान

आज पूरा विश्व एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहां भौतिक प्रगति के बावजूद मानव जीवन असंतुलन, तनाव, प्रदूषण और पर्यावरण संकट से घिरता जा रहा है। आधुनिकता की अंधी दौड़ ने मनुष्य को सुविधाएं तो दी हैं, लेकिन मानसिक शांति, प्रकृति से जुड़ाव और सांस्कृतिक संतुलन उससे दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में भारत की सनातन संस्कृति विश्व मानवता के लिए एक प्रकाशपुंज बनकर उभर रही है। योग, आयुर्वेद, प्रकृति संरक्षण और जीवन मूल्यों पर आधारित भारतीय परमपराएं आज केवल भारत की पहचान नहीं रहीं, बल्कि वैश्विक समाधान के रूप में स्वीकार की जा रही हैं। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने सदैव प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने का संदेश दिया। हमारे ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही यह समझ लिया था कि प्रकृति के बिना मानव अस्तित्व संभव नहीं। यही कारण है कि भारतीय दर्शन में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को देवतुल्य माना गया। अथर्ववेद का वाक्य 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का शाश्वत संदेश है। पृथ्वी को माता मानने वाली संस्कृति कभी उसके शोषण की नहीं, बल्कि संरक्षण की बात करती है।

आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक आपदाओं की चुनौती से जूझ रहा है, तब भारत की यही सांस्कृतिक चेतना प्रासंगिक हो उठी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चारधाम यात्रा के अवसर पर दिए गए 'पंच संकल्प' भी इसी भारतीय चिंतन की आधुनिक अभिव्यक्ति हैं। जल संरक्षण, स्वच्छता, वृक्षारोपण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता केवल सरकारी अभियान नहीं, बल्कि भारतीय जीवन दृष्टि का हिस्सा हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज इन मूल्यों को केवल भाषणों तक सीमित न रखे, बल्कि व्यवहार में उतारे। भारतीय संस्कृति की दूसरी महान देन है -योग। भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा- 'योगः कर्मसु कौशलम्' अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है। योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का अभ्यास नहीं, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में तनाव, अवसाद और मानसिक अशांति तेजी से बढ़ रही है। ऐसे समय में योग विश्व के लिए एक प्रभावी समाधान बनकर सामने आया है।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया जाना भारत की सांस्कृतिक शक्ति और योग की वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है। अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और कैरेबियन देशों में योग केंद्रों की बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि विश्व अब भारतीय ज्ञान परंपरा की ओर आकर्षित हो रहा है। करोड़ों लोग योग को अपनाकर न केवल शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त कर रहे हैं, बल्कि मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति भी अनुभव कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव केवल योग तक सीमित नहीं है। आज विश्वभर में भारतीय त्योहारों, भारतीय खानपान, आयुर्वेद और आध्यात्मिक परंपराओं के प्रति अभूतपूर्व आकर्षण दिखाई दे रहा है। विदेशों में हिंदू मंदिरों का निर्माण और भारतीय उत्सवों में विदेशी नागरिकों की बढ़ती भागीदारी यह सिद्ध करती है कि भारत की संस्कृति मानवता को जोड़ने वाली संस्कृति है। यह संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् पूरा विश्व एक परिवार है की भावना पर आधारित है।

हालांकि, यह भी सच है कि आधुनिकता के प्रभाव में नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से दूर होती जा रही है। पाश्चात्य जीवनशैली की अंधानुकरण प्रवृत्ति ने पारिवारिक मूल्यों, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और आत्मिक संतुलन को कमजोर किया है। यदि भारत को विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ना है, तो उसे अपनी सांस्कृतिक आत्मा को सुरक्षित रखना होगा। केवल तकनीकी विकास और आर्थिक प्रगति ही किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति नहीं होती। उसकी संस्कृति, जीवन मूल्य और नैतिक चेतना ही उसकी स्थायी पहचान बनाते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि योग को केवल एक दिवस का उत्सव न बनाया जाए, बल्कि उसे दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया जाए। इसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण को भी केवल सरकारी नीतियों तक सीमित न रखकर जनआंदोलन का रूप देना होगा। जल बचाना, पौधरोपण करना, प्लास्टिक का सीमित उपयोग और स्वच्छता अपनाना प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व होना चाहिए।

निस्संदेह, भारत की सनातन परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य को सुरक्षित और संतुलित बनाने का मार्ग भी है। विश्व जिन समस्याओं के समाधान की तलाश कर रहा है, उनका उत्तर भारत की संस्कृति, योग और प्रकृति संरक्षण की भावना में निहित है। यही भारत की वास्तविक शक्ति है और यही मानवता के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला भी।

शिक्षा का अधिकार : तीन से छः वर्ष के बच्चों की बढ़ती संवैधानिक बहस

संकलन – डॉ. आभा सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत में शिक्षा को लंबे समय से सामाजिक समानता और अवसर की सबसे मजबूत आधारशिला माना जाता रहा है। इसी संदर्भ में अप्रैल 2026 को सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका पर सुनवाई हुई, जिसमें केंद्र सरकार, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से जवाब माँगा गया। हरिप्रिया पटेल द्वारा दायर जनहित याचिका में सुप्रीम कोर्ट से आग्रह किया गया कि शिक्षा के अधिकार को केवल छः से चौदह वर्ष के बच्चों तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे तीन से छः वर्ष के बच्चों तक भी लागू किया जाना चाहिये। सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि वे इस मुद्दे की जाँच करना चाहते है और संबंधित पक्षों को अपना जवाब देना होगा। याचिका का मूल तर्क यह था कि प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा को अब नीति–स्तर पर नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकार के रूप में देखा जाना चाहिए, ताकि छोटे बच्चों की पढ़ाई की शुरुआत बेहतर और समान अवसर के साथ हो सके।

सुनवाई के दौरान अदालत ने केवल आयु–सीमा के विस्तार पर ही नहीं, बल्कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम के लागू होने के तरीके पर भी ध्यान दिया। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि जिन बच्चों को शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के तहत नजदीक के स्कूलों में सीटें आवंटित की गई हैं, उन्हें बिना किसी देरी के प्रवेश मिलना चाहिए। अदालत के अनुसार, अगर सरकारी प्रक्रिया से किसी स्कूल में बच्चे का नाम तय हो चुका है, तो स्कूल उस निर्णय पर सवाल उठाकर दाखिले को टाल नहीं सकता। याचिकाकर्ता की ओर से यह भी कहा गया कि देश के कई हिस्सों में सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की कमी और तकनीकी संसाधनों की कमी शुरुआती शिक्षा को प्रभावित कर रही है। याचिका में यह भी दर्ज है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को पाँच + तीन + तीन + चार मॉडल में देखती है, जिसके अनुसार स्कूली शिक्षा को बच्चों की आयु और मानसिक विकास के आधार पर चार चरणों में विभाजित किया गया है। इसमें शुरुआती वर्षों में प्री–स्कूल से दूसरी कक्षा तक की बुनियादी शिक्षा, उसके बाद तीसरी से पाँचवीं तक की तैयारी अवस्था, फिर छठी से आठवीं तक का मध्य चरण और अंत में नौवीं से बारहवीं तक की माध्यमिक शिक्षा को शामिल किया गया है। जिसमें तीन से अठारह वर्ष तक की पूरी यात्रा शामिल है, तथा याचिका में इस व्यापक दृष्टिकोण को अनुच्छेद 21(क) से जोड़ने की माँग भी की गई थी।

यह मामला इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल एक कानूनी बहस नहीं, बल्कि लाखों बच्चों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है। अगर शिक्षा का अधिकार तीन से छः वर्ष तक बढ़ता है, तो सबसे पहले सरकार को आंगनवाड़ी, प्री–स्कूल, शिक्षक–प्रशिक्षण और आधारभूत ढाँचे पर अधिक गंभीर निवेश करना होगा। इससे गरीब, ग्रामीण और वंचित वर्ग के बच्चों को शुरुआती उम्र में ही संगठित शिक्षा मिलने की संभावना बढ़ेगी। साथ ही यह भी स्पष्ट होगा कि शिक्षा केवल प्राथमिक स्कूल से शुरू होने वाली प्रक्रिया नहीं है, बल्कि बच्चे के जीवन की पहली सीख उसी समय शुरू हो जाती है जब वह भाषा, व्यवहार और सामाजिक समझ विकसित कर रहा होता है। इसी सुनवाई में यह भी सामने आया कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत आवंटित सीटों पर प्रवेश में देरी एक आम समस्या है, और सुप्रीम कोर्ट ने इस देरी को कानून की भावना के खिलाफ माना। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत राज्य द्वारा जिन छात्रों को नजदीक के स्कूलों में सीट आवंटित की गई है, उन्हें तुरंत प्रवेश देना अनिवार्य होगा। किसी प्रशासनिक विवाद, तकनीकी आपत्ति या अन्य बहाने के आधार पर दाखिले को रोका नहीं जा सकता।

सुप्रीम कोर्ट का यह दृष्टिकोण भारत में शिक्षा के अधिकार की नई व्याख्या की ओर इशारा करता है। अभी शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 का दायरा छः से चौदह वर्ष तक है, लेकिन अदालत ने तीन से छः वर्ष के बच्चों के लिए भी जवाब माँगकर यह संकेत दिया है कि अब प्रारंभिक शिक्षा को भी गंभीर संवैधानिक दृष्टि से देखा जा रहा है। यदि सरकारें इस दिशा में सकारात्मक रुख अपनाती हैं, तो यह बदलाव केवल कानून में संशोधन नहीं होगा, बल्कि यह देश के सबसे छोटे बच्चों के लिए एक बड़ा सामाजिक व शैक्षिक सुधार साबित हो सकता है। फिलहाल यह मामला देश की शिक्षा व्यवस्था के भविष्य से जुड़ा एक महत्वपूर्ण कदम बन गया है। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका पर नोटिस जारी कर यह संकेत दिया है कि प्रारंभिक शिक्षा को लेकर अब गंभीर संवैधानिक चर्चा शुरू हो चुकी है। यदि सरकारें और अदालत इस दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो यह केवल एक कानूनी विस्तार नहीं होगा, बल्कि भारत में शिक्षा की समझ में एक बड़ा बदलाव होगा, ऐसा बदलाव जो बच्चे के जीवन की पहली सीढ़ी से ही समान अवसर देने की कोशिश करेगा।

धर्मांतरण गिरोह पर एटीएस की बड़ी कार्रवाई

संकलन – डॉ. रामशंकर, सहायक प्राध्यापक, आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा

16 अप्रैल : मुर्शिदाबाद हिंसा पर गरमाई राजनीति, हिंदू परिवारों के पलायन का दावा – पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में सांप्रदायिक तनाव और हिंसा की घटनाओं के बाद कई हिंदू परिवारों के पलायन के दावे सामने आए। भाजपा और हिंदू संगठनों ने राज्य सरकार पर हिंदुओं की सुरक्षा में विफल रहने का आरोप लगाया, जबकि प्रशासन ने हालात नियंत्रण में होने की बात कही।

17 अप्रैल : उत्तर प्रदेश में धर्मांतरण गिरोह पर ATS की बड़ी कार्रवाई, कई संदिग्ध हिरासत में – लखनऊ, मेरठ और कानपुर में एटीएस ने कथित धर्मांतरण नेटवर्क पर छापेमारी कर कई लोगों को हिरासत में लिया। जांच एजेंसियों ने दावा किया कि आर्थिक सहायता और शादी का लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था।

19 अप्रैल : उत्तर प्रदेश के ज्ञानवापी मस्जिद मामले में अदालत में तीखी बहस – ज्ञानवापी परिसर विवाद में हिंदू और मुस्लिम पक्षों के बीच अदालत में लंबी बहस हुई। हिंदू पक्ष ने ASI रिपोर्ट का हवाला देते हुए मंदिर के अवशेष होने का दावा दोहराया, जबकि मुस्लिम पक्ष ने रिपोर्ट पर सवाल उठाए।

21 अप्रैल : छत्तीसगढ़ के आदिवासी इलाकों में धर्मांतरण के आरोपों पर तनाव बढ़ा – जशपुर और बस्तर क्षेत्र में कथित धर्मांतरण गतिविधियों को लेकर स्थानीय पंचायतों और ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। हिंदू संगठनों ने आदिवासी संस्कृति और परंपराओं की रक्षा के लिए आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी।

23 अप्रैल : राजस्थान में गौतस्करी रोकने गई टीम पर हमला, कई घायल – अलवर जिले में गौतस्करी की सूचना पर कार्रवाई करने पहुंची टीम पर हमला कर दिया गया। घटना में कई लोग घायल हुए, जिसके बाद हिंदू संगठनों ने दोषियों पर कार्यवाही करने की मांग की।

24 अप्रैल : नई दिल्ली में विश्व हिंदू परिषद ने 'घर वापसी' अभियान तेज किया। विश्व हिंदू परिषद ने देशभर में धर्मांतरण विरोधी अभियान और घर वापसी कार्यक्रमों को तेज करने की घोषणा की। संगठन का दावा है कि बड़ी संख्या में लोग स्वेच्छा से सनातन धर्म में लौट रहे हैं।

25 अप्रैल : कर्नाटक में मंदिरों की आय पर सरकारी नियंत्रण के खिलाफ संतों का आंदोलन– बेंगलुरु में हिंदू संगठनों और संत समाज ने मंदिर प्रशासन में सरकारी हस्तक्षेप के विरोध में प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि केवल हिंदू धार्मिक संस्थानों को ही सरकारी नियंत्रण में रखा जाता है।

27 अप्रैल : उत्तराखंड में लव जिहाद और धर्मांतरण मामलों पर नई गाइडलाइन जारी – देहरादून में राज्य सरकार ने

धर्मांतरण विरोधी कानून के प्रभावी पालन के लिए नई प्रशासनिक गाइडलाइन जारी की। पुलिस अधिकारियों को संदिग्ध मामलों की त्वरित जांच करने के निर्देश दिए गए।

29 अप्रैल : झारखंड में सरना संस्कृति और धर्मांतरण विवाद पर आदिवासी आंदोलन – रांची और आसपास के इलाकों में आदिवासी संगठनों ने सरना संस्कृति की रक्षा को लेकर प्रदर्शन किया। नेताओं ने आरोप लगाया कि धर्मांतरण के कारण पारंपरिक आदिवासी पहचान कमजोर हो रही है।

2 मई : महाराष्ट्र में औरंगजेब विवाद पर संभाजीनगर में तनाव बढ़ा – औरंगजेब की कब्र हटाने की मांग को लेकर हिंदू संगठनों ने प्रदर्शन किया। प्रशासन ने एहतियात के तौर पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर सोशल मीडिया निगरानी बढ़ा दी।

3 मई : मध्य प्रदेश में धर्मांतरण मामले में नाबालिग लड़कियों को निशाना बनाने का आरोप – भोपाल पुलिस की जांच में सामने आया कि कथित धर्मांतरण नेटवर्क नाबालिग लड़कियों को भी निशाना बना रहा था। पुलिस ने कई जिलों में छापेमारी कर इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य जब्त किए।

4 मई : छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण के आरोप में प्रार्थना सभा पर पुलिस की कार्रवाई – दुर्ग जिले में एक प्रार्थना सभा के दौरान कथित धर्मांतरण की शिकायत मिलने पर पुलिस ने जांच शुरू की। हिंदू संगठनों ने आरोप लगाया कि ग्रामीणों को लालच देकर धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था।

8 मई : महाराष्ट्र में मस्जिद के लाउडस्पीकर विवाद पर दो समुदाय आमने–सामने – ठाणे में लाउडस्पीकर की आवाज को लेकर विवाद बढ़ गया। हिंदू संगठनों ने प्रशासन से ध्वनि प्रदूषण नियमों का पालन कराने की मांग की, जबकि दूसरे पक्ष ने धार्मिक स्वतंत्रता का मुद्दा उठाया।

11 मई : गुजरात के मंदिर के बाहर धार्मिक झंडा हटाने को लेकर बवाल, कई घायल – वडोदरा में मंदिर परिसर के बाहर लगे धार्मिक झंडे को हटाने को लेकर दो समुदायों के बीच तनाव फैल गया। पथराव और झड़प में कई लोग घायल हुए, जिसके बाद पुलिस ने इलाके में भारी सुरक्षा बल तैनात किया।

11 मई : उत्तराखंड में लव जिहाद के आरोप में युवक गिरफ्तार, परिवार ने सुरक्षा मांगी – देहरादून में एक हिंदू युवती के परिवार ने युवक पर फर्जी पहचान और धर्म छिपाकर संबंध बनाने का आरोप लगाया। पुलिस ने धर्मांतरण विरोधी कानून के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को हिरासत में लिया।

12 मई : केरल हिंदू छात्रा के कथित धर्मांतरण मामले पर कॉलेज में हंगामा–कोच्चि के एक कॉलेज में हिंदू छात्रा के कथित धर्मांतरण और कट्टरपंथी संगठन से संपर्क के आरोपों को लेकर छात्रों ने प्रदर्शन किया। परिवार ने पुलिस में शिकायत दर्ज कर मामले की जांच की मांग की।

12 मई – तेलंगाना मंदिर में तोड़फोड़ और मूर्तियां खंडित, इलाके में तनाव– हैदराबाद के बाहरी इलाके में एक मंदिर में तोड़फोड़ और मूर्तियां खंडित किए जाने की घटना के बाद हिंदू संगठनों में आक्रोश फैल गया। पुलिस ने CCTV फुटेज के आधार पर जांच शुरू की।

14 मई : तमिलनाडु में डीएमके के नेता और विधायक उदयनिधि स्टालिन पर FIR की मांग – तमिलनाडु में डीएमके के नेता और विधायक उदयनिधि स्टालिन पर FIR की मांग तेज हो गयी है। उदयनिधि एक सभा के दौरान सनातन धर्म को खत्म करने का बयान दिया है। इस पर कटनी SP को दिया ज्ञापन दे दिया गया है।

14 मई : महाराष्ट्र में धर्म स्वतंत्रता विधेयक 2026 पारित, जबरन धर्मांतरण पर 10 साल तक की सजा – महाराष्ट्र विधानसभा ने धर्म स्वतंत्रता विधेयक 2026 पारित किया। कानून में जबरन, लालच, धोखाधड़ी और विवाह के जरिए धर्मांतरण पर सख्त रोक लगाई गई है। अवैध धर्मांतरण पर 10 साल तक की सजा और 5 लाख रुपये जुर्माने का प्रावधान किया गया है।

15 मई : धार भोजशाला मस्जिद नहीं वाग्देवी का मंदिर– हाई कोर्ट – मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने भोजशाला मामले में शुक्रवार को फैसला सुनाते हुए कहा कि विवादित परिसर देवी सरस्वती को समर्पित एक मंदिर है। न्यायमूर्ति विजय कुमार शुक्ला और न्यायमूर्ति आलोक अवस्थी ने इस मामले से संबंधित पांच याचिकाओं और एक रिट अपील पर पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक तथ्यों, एएसआई की अधिसूचनाओं एवं उनके वैज्ञानिक सर्वेक्षण और कानूनी प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए फैसला सुनाया। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने आगे कहा की भोजशाला परिसर और कमाल मौला मस्जिद के विवादित क्षेत्र का धार्मिक स्वरूप वाग्देवी (सरस्वती) के मंदिर वाली भोजशाला के रूप में तय किया जाता है। अदालत ने कहा कि हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि ऐतिहासिक साहित्य ने स्थापित किया है कि विवादित क्षेत्र का स्वरूप भोजशाला के रूप में था, जो कि परमार वंश के राजा भोज से जुड़ा संस्कृत अध्ययन केंद्र था। अदालत ने कहा कि राजा भोज के काल से संबंधित साहित्य और स्थापत्य संबंधी संदर्भ भी संकेत देते हैं कि धार में देवी सरस्वती को समर्पित एक मंदिर विद्यमान था।

एक वैश्विक सांस्कृतिक पहचान के रूप में
उभरा भारत

संकलन – डॉ. राजीव वर्मा

यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और कैरेबियन देशों में हिंदू मंदिरों का निर्माण, धार्मिक आयोजनों में बढ़ती भागीदारी तथा भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण यह संकेत दे रहे हैं कि हिंदुत्व अब केवल भारत तक सीमित विचार नहीं रहा, बल्कि एक वैश्विक सांस्कृतिक पहचान के रूप में उभर रहा है।

जर्मनी के श्वेर्टे (Schwerte, Germany) शहर में वर्ष 2025 में "श्री कनकथुर्का अंबाल मंदिर" का भव्य उद्घाटन विशेष चर्चा का विषय बना। इस मंदिर के निर्माण में लगभग साढ़े छह वर्ष लगे। उद्घाटन समारोह में लंदन, और श्रीलंका से आए पुजारियों ने वैदिक अनुष्ठान संपन्न कराए। मंदिर में भारतीय शैली की मूर्तिकला और पारंपरिक स्थापत्य ने स्थानीय लोगों को भी आकर्षित किया। मंदिर समिति के अनुसार यह केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और सनातन मूल्यों का केंद्र बनेगा। इसी प्रकार जर्मनी के उएंट्रोप (Uentrop,Germany) स्थित हिंदू सांस्कृतिक केंद्र में 2025 के वार्षिक मंदिर उत्सव में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर धार्मिक शोभायात्राएं, पूजा–अर्चना और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। स्थानीय प्रशासन और जर्मन समाज के लोगों ने भी इसमें उत्साहपूर्वक भागीदारी दिखाई।

ब्रिटेन के स्लॉ (Slough, United Kingdom) शहर में आयोजित जगन्नाथ रथ यात्रा में एक हजार से अधिक श्रद्धालु शामिल हुए। ब्रिटिश सांसदों, स्थानीय मेयर और विभिन्न समुदायों के प्रतिनिधियों ने इस आयोजन में भाग लेकर इसे बहुसांस्कृतिक ब्रिटेन की पहचान बताया। भजन, कीर्तन और विशाल रथ यात्रा ने भारतीय संस्कृति की झलक प्रस्तुत की। ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट (Gold Coast, Australia) क्षेत्र में 'बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर' का उद्घाटन भी वैश्विक हिंदू उपस्थिति का महत्वपूर्ण उदाहरण बना। इस समारोह में तीन हजार से अधिक लोग शामिल हुए तथा स्थानीय सांसदों और सामुदायिक संगठनों ने इसे सांस्कृतिक सौहार्द का प्रतीक बताया। कैरेबियन क्षेत्र के त्रिनिदाद एवं टोबैगो (Trinidad and Tobago) ने भी राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन (Port of Spain) में भव्य राम मंदिर निर्माण की घोषणा की है। वहां की सरकार और भारतीय मूल के समुदाय इसे पश्चिमी गोलार्ध में हिंदू सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करना चाहते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि योग, आयुर्वेद, भारतीय त्योहारों और मंदिर संस्कृति के बढ़ते प्रभाव ने विश्वभर में हिंदुत्व की स्वीकार्यता को बढ़ाया है। आज हिंदुत्व केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, परिवार व्यवस्था, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक गौरव का वैश्विक प्रतीक बनता जा रहा है।

हिंदू समाज एकजुट हो, ट्रेंडिंग रहा

संकलन – प्रकाश श्रीवास्तव

लेंसकार्ट (Lenskart) आंतरिक नीति विवाद : वायरल ट्रेंड - लेंसकार्ट के एक कथित आंतरिक दस्तावेज का स्क्रीनशॉट लीक हुआ था। इसमें आरोप लगाया गया कि कंपनी मुस्लिम और सिख कर्मचारियों को धार्मिक पोशाक पहनने की अनुमति देती है, लेकिन हिंदू कर्मचारियों पर दृश्यमान धार्मिक प्रतीक (जैसे कलावा या तिलक) लगाने पर रोक लगाती है।

प्रतिक्रिया : इसके विरोध में प्रोग्रेसिव हिंदू डिजिटल क्रिएटर्स और यूज़र्स ने ऐप को 1–स्टार रेटिंग देने और अनइंस्टॉल करने का अभियान चलाया। इसके बाद सीईओ पीयूष बंसल को स्पष्टीकरण जारी करना पड़ा कि यह दस्तावेज पुराना था और इसे सुधारा जा चुका है।■■■

ऑप्टिकल इल्यूजन वाली हनुमान मूर्ति - वायरल ट्रेंड – मई के मध्य में भगवान हनुमान की एक विशिष्ट रूप से तराशी गई मूर्ति की रील अत्यधिक वायरल हुई।

प्रतिक्रिया: इस पोस्ट के ट्रेंड होने का कारण मूर्ति की बनावट थी, जिसमें एक ऑप्टिकल इल्यूज़न (दृष्टि भ्रम) था– आप किसी भी कोण से देखें, हनुमान जी की आंखें सीधे आपकी ओर देखती हुई प्रतीत होती थीं। इस रील को लाखों व्यूज मिले और यूज़र्स ने कमेंट बॉक्स में 'जय श्री राम' के नारों के साथ आधुनिक शिल्प कौशल और हिंदू आध्यात्म के इस अनूठे संगम की सराहना की। ■■■

सनातन एक जीवन शैली है - वायरल रील्स : मुख्य संदेश– कंटेंट क्रिएटर्स ने इस बात पर जोर दिया है कि सनातन धर्म केवल एक संगठित धर्म नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत विकास, कर्म और आंतरिक शांति पर आधारित एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक जीवन शैली है।

ट्रेंडिंग का कारण : डिवाइन हिंदू और रीसंस्कृत जैसे पेजों ने हिंदू विरासत का जश्न मनाने वाले खूबसूरत पोस्ट शेयर किए। जगन्नाथ पुरी के अनिल गोचिकर जैसे मंदिर सेवायतों को दिखाने वाला एक पोस्ट बेहद वायरल हुआ, जिस पर लाखों लोगों ने हिंदू गौरव दिखाने के लिए 'जय श्री राम' कमेंट किया।■■■

सनातन विरोधी बयानों के खिलाफ आक्रोश (मई 2026 विधानसभा बयान) - मुख्य संदेश : 12 मई 2026 को तमिलनाडु विधानसभा में सनातन धर्म के खिलाफ दिए गए राजनीतिक बयानों के विरोध में हिंदू मूल्यों का मजबूती से बचाव किया गया।

ट्रेंडिंग का कारण : वायरल पोस्टों में इन बयानों की कड़ी निंदा की गई। समर्थक हैंडल्स और राजनीतिक विश्लेषकों ने वीडियो क्लिप शेयर करते हुए तर्क दिया कि सनातन धर्म शाश्वत और प्राकृतिक नियमों का प्रतिनिधित्व करता है, जो आस्तिक और नास्तिक दोनों को स्वीकार करता है।■■■

जस्टिस नागरत्ना का 'हिंदू समाज एकजुट हो' का संदेश : मुख्य संदेश - इस कानूनी टिप्पणी को बढ़ावा देना कि हिंदू समाज को अपनी सभ्यता की ताकत बनाए रखने के लिए एकजुट होना चाहिए और आंतरिक भेदभाव को खत्म करना चाहिए।

ट्रेंडिंग का कारण : सबरीमाला मामले पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों से जुड़े ग्राफिक्स वायरल हुए। हिंदू डिजिटल समुदायों ने धर्म के भीतर समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए इस संदेश की व्यापक सराहना की।■■■

भव्य हिंदू सम्मेलन और शताब्दी बैठकें : मुख्य संदेश – स्थानीय समुदायों को 'घर के अंदर हम एक जाति हैं, घर से बाहर कदम रखते ही हम हिंदू हैं' जैसे एकजुट करने वाले नारों के साथ जोड़ना।

ट्रेंडिंग का कारण : स्थानीय 'हिंदू सम्मेलनों' (जैसे 1 मई को गोवा के कुड़चड़े और 25 अप्रैल को तांडूर में हुए कार्यक्रम) के डिजिटल निमंत्रण और वीडियो खूब ट्रेंड हुए। ये पोस्ट सांस्कृतिक संरक्षण, अन्नप्रसादम (भंडारे) और सनातन विरोधी ऑनलाइन कंटेंट के विरोध पर केंद्रित थे। ■■■

केरल विषु विज्ञापन विवाद और बहिष्कार अभियान - मुख्य संदेश : हिंदू देवी–देवताओं के सम्मान और कॉरपोरेट जवाबदेही के लिए बड़े पैमाने पर ऑनलाइन लामबंदी।

ट्रेंडिंग का कारण : अप्रैल के मध्य में विषु त्योहार के आसपास, केरल में एक रेस्तरां के विज्ञापन में भगवान कृष्ण को मांसाहारी व्यंजनों के साथ दिखाया गया था। इसके खिलाफ बड़ा डिजिटल विरोध शुरू हुआ, जिससे कानूनी कार्रवाई तक बात पहुंची। साथ ही, देवी–देवताओं की तस्वीरों से जुड़ी कथित आंतरिक नीतियों को लेकर 'लेंसकार्ट' जैसे ब्रांडों को भी टारगेट किया गया। ■■■

भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध समाचार

संकलन – डॉ. प्रवीण सत्येन्द्र विद्यालंकार, लेखिका व साहित्यकार एवं वैदिक दर्शन विशेषज्ञ

भारत की ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य का पथ प्रदर्शक प्रकाश है। भारतीय ज्ञान परम्परा अब मात्र अध्ययन का विषय नहीं ˙ बल्कि जीवन और राष्ट्र–निर्माण का आधार हैं।

1. 17 अप्रैल 2026 – भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु ए.आई.सी.टी.ई.–वानी ने योजना का तीसरा संस्करण प्रारम्भ किया। जिसका उद्देश्य तकनीकी शिक्षा में भारतीय भाषाओं और ज्ञान परम्परा को बढ़ावा देना है।

2. 18 अप्रैल 2026 – जोधपुर (राजस्थान) – भारतीय ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक प्रणालियों को शिक्षा, नेतृत्व और तकनीकी नवाचार के साथ एकीकृत करने पर चर्चा हुई।

3. 01 मई 2026 कुशीनगर (उ0प्र0) – ज्ञान और आत्मज्ञान के प्रतीक के रूप में बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर में पारंपरिक बौद्ध ज्ञान परम्परा के कार्यक्रम हुए।

4. 13 – 15 मई 2026 (बद्रीनाथ, उत्तराखण्ड) – अंतर्राष्ट्रीय बदरिकाश्रम सम्मेलन – बद्रीनाथ में भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन और संस्कृति को समझने के लिए एक अनूठा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ, जिसमें शोधकर्ता एवं विद्वानों ने भाग लिया।

नवाचार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के छात्रों ने बनाया ऑटोनोमस ड्रोन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी और प्रोद्योगिकी संकाय ने विज्ञान और तकनिकी के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि प्राप्त की है। संकाय के कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के प्रोफेसर मयंक अग्रवाल और इलेक्ट्रोनिक्स विज्ञान विभाग के युवा वैज्ञानिक प्रो. विपुल शर्मा के निर्देशन में दोनों विभागों के युवा वैज्ञानिकों एवं छात्रों की ओर से एक अत्याधुनिक ऑटोनोमस ड्रोन (नान–जीपीएस) विकसित किया गया है। यह ड्रोन ISRO की ओर से निर्धारित मानकों के अनुसार तैयार किया गया है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सहयोग से विकसित यह ड्रोन विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किया जा सकेगा। टीम अभी इसे और अधिक विकसित किये जाने पर भी काम कर रही है। विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए यह उत्साह बढाने वाली उपलब्धि है। इस नवाचार से विश्वविद्यालय में प्रसन्नता का वातावरण है।

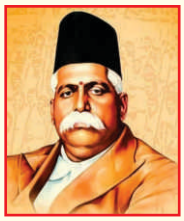

केवल भूमि के किसी टुकड़े को तो 'राष्ट्र' नहीं कहते। एक विचार, एक आचार, एक सभ्यता एवं एक परंपरा से, लोग पुरातन काल से रहते चले आए हैं, उन्हीं लोगों से राष्ट्र बनता है। इस देश को हमारे ही कारण 'हिन्दुस्थान' नाम दिया गया है।

–डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार

माता–पिता को यह जानना चाहिये कि उनके ऊपर बहुत बड़ा दायित्व उसी समय है। जिस समय उन्होंने किसी जीव को जगत् में प्रविष्ट कराया, से उनके ऊपर यह भार है कि वह जीव अपना आत्यन्तिक कल्याण कर सके, ऐसा ही वायुमण्डल उसके चारों ओर रख कर उसे सुयोग्य संस्कारों से पूर्ण करें। इसलिए प्रत्येक गृह में कुछ नियमों का पालन अनिवार्य होना चाहिए। – श्री गुरुजी

उपेक्षित वर्गों को कब तक सुविधाएं देनी होंगी, यह भी उन पर छोड़ देना चाहिए। परंतु अंततः एक समय आना चाहिए, जब प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस करें कि हम सब एक समान हैं तथा एक जैसे पढ़े लिखे हैं। समाज में इसकी स्थापना होनी ही चाहिए।

– बाला साहब देवरस

–डेस्क

जिससे विजय मिले वही कार्य करना और उस पथ पर बढ़ना, यही वीरों को शोभा देता है और फिर यह तो राष्ट्रीय जागरण का पर्व है। हिंसा–प्रतिहिंसा, सरकारी अत्याचार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। जिससे लक्ष्य की पूर्ति हो और उद्देश्य प्राप्ति की दिशा में हम बढ़ें, वही निर्णय लेना उचित है। कहते थे, दूसरे पर हिंसा मत करो, लेकिन महान उद्देश्यों के लिए आत्म त्याग हेतु अवश्य आगे बढ़ो।

– रज्जू भैय्या

सहस्त्राब्दियों के संस्कारों के परिणामस्वरूप लोक–मानस में भारत के एक देश, एक जन और संस्कृति होने का भाव सुप्तावस्था में ही क्यों न हो, विद्यमान है। हर युद्ध के समय यह प्रकर्ष से प्रकट हो जाता है; पर शांतिकाल में वह पुनः सो जाता है और लोगों के व्यक्तिगत, दलगत, जातिगत एवं भाषागत भाव अधिक प्रबल हो जाते हैं। उसे सदा जाग्रत् रखने के लिए अतीत के गौरव का बोध कराना पहली आवश्यकता है। – कु.सी. सुदर्शन

'स्व' के मार्ग पर चलना। घर, परिवार, समाज में स्वभाषा बोलना। यदि दूसरे प्रान्त में रहता हूँ तो वहाँ की भाषा भी सीखना। अपना वेश पहनना, हर दिन नहीं पहन सकते, लेकिन पूजा में पहनना। स्वदेशी वस्तु का उपयोग अधिक करना। यही हमें 'स्व' से जोड़ेगा।

– डॉ. मोहन भागवत

भारतीय मजदूर संघ

संकलन – प्रकाशवीर, पूर्व प्रधानाचार्य, शिशुमंदिर

मुख्यालय : दत्तोपंत ठेंगड़ी भवन, 27 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।

स्थापना : श्रमिक क्षेत्र में भारतीयता का उद्घोष करने वाले इस संगठन की स्थापना संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने 23 जुलाई 1955 को भोपाल में की थी। श्री राम नरेश सिंह (बड़े भाई) भी प्रारंभ से ही इसके प्रमुख कार्यकर्ता थे।

प्रस्तावना : 'चाहे जो मजबूरी हो', 'मांग हमारी पूरी हो' जैसे नारे लगाने वाले कम्युनिस्ट सीधे और सरल मजदूरों को भड़का कर देश की प्रगति रोकना चाहते थे, ऐसे में भारतीय मजदूर संघ ने 'देश के हित में करेंगे काम', 'काम के लेंगे पूरे दाम' का नारा दिया। उन्होंने 'दुनिया के मजदूरों एक हो' की बजाय 'मजदूरों दुनिया को एक करो' की बात कही। 'कमाने वाला खाएगा' के बदले 'कमाने वाला खिलाएगा' पर जोर दिया।

1962 में चीन के हमले के समय वामपंथी मजदूर संगठनों ने रक्षा सामग्री बनाने वाले उद्योगों में हड़ताल जारी रखी, पर भारतीय मजदूर संघ ने 'राष्ट्रीय मजदूर मोर्चा' बनाकर इस हड़ताल का विरोध किया। इस प्रकार उन्होंने देश सर्वोपरि की भावना का परिचय दिया। 1971 के युद्ध के समय भी ऐसा ही किया गया।

भारतीय मजदूर संघ एक केंद्रीय संगठन है। विभिन्न उद्योगों तथा कार्यालयों में कार्यरत महासंघ इससे संबद्ध होते हैं। श्रमिक इन महासंघों के ही सदस्य बनते हैं। भारतीय मजदूर संघ 1996 से लगातार भारत का सबसे बड़ा श्रमिक संगठन बना हुआ है। इस संगठन को चलाने के लिए सैकड़ो वैतनिक तथा अवैतनिक पूर्णकालिक कार्यकर्ता काम करते हैं। राष्ट्रीय अधिवेशन में काम की समीक्षा होती है, तथा प्रस्तावों द्वारा श्रमिक नीति पर अपने विचार सबके सामने रखे जाते हैं। संस्था के प्रयास से अब 01 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के बदले 17 सितंबर को 'विश्वकर्मा जयंती' का प्रचलन पूरे देश में होने लगा है। लाल झंडे की जगह अब 'भगवा झंडा' ने ले ली है। 'भारत माता की जय' और 'वंदे मातरम्' के स्वर अब सब ओर गुंजाने लगे हैं।

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम

मुख्यालय : जशपुर (छत्तीसगढ़)

ध्येयवाक्य : नगरवासी, ग्रामवासी, बनवासी, हम सब हैं भारतवासी।

प्रकाशक : दिल्ली से मासिक 'वनबंधु' (हिंदी एवं अंग्रेजी) तथा उदयपुर से हिंदी मासिक 'बप्पा रावल'।

स्थापना : भारत के वनवासी क्षेत्र में ईसाई गतिविधियां बहुत समय से चल रही थीं। आजादी मिलने के बाद 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' ने इस ओर भी ध्यान दिया। द्वितीय सर संघचालक प० पू० श्री गुरु जी एवं समाज सेवी ठक्कर बापा के आशीर्वाद से जशपुर वर्तमान छत्तीसगढ़ में कार्यरत सरकारी वकील श्री रमाकांत केशव (बालासाहब) देशपांडे ने नौकरी छोड़कर 26 दिसंबर 1952 को जशपुर में ही इस संस्था की स्थापना की।

आश्रम के कार्य : आश्रम के कार्य के चार मुख्य आयाम हैं ।

प्रथम आयाम : शिक्षा के अंतर्गत विद्यालय, छात्रावास, पुस्तकालय और वाचनालय चलाए जाते हैं। इनका संचालन स्थानीय समितियां करती हैं।

द्वितीय आयाम : दूसरे प्रकल्प चिकित्सा के अंतर्गत जनजातीय क्षेत्रों में स्थाई अस्पताल खोले जाते हैं। मोबाइल वाहन से दूर के गांव में चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराई जाती है।

तृतीय आयाम : उद्योग प्रशिक्षण का है। कम शिक्षित पुरुष तथा महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, बढ़ई, मुर्गी एवं मधुमक्खी पालन जैसे कम लागत वाले काम सिखाए जाते हैं।

चतुर्थ आयाम : धर्म एवं राष्ट्रभाव जागरण का है। बनवासियों के अज्ञान, गरीबी एवं भोलेपन का लाभ उठाकर मिशनरियों ने उन्हें ईसाई बनाया है, अतः उनके मध्य भजन मंडली और सत्संग केन्द्रों से बड़ों में तथा संस्कार केन्द्रों से नई पीढ़ी में इसी आस्था को सुदृढ़ किया जाता है।

उपरोक्त आयामों के द्वारा ईसाई गतिविधियों पर रोक लगी है। तथा लाखों लोग अपने पूर्वजों के पवित्र हिंदू धर्म में लौट आए हैं। 'धर्मांतरण' की धारा अब 'परावर्तन' की महाधारा में बदल रही है।

पंच परिवर्तन

–डेस्क

स्व : उत्तराखण्ड की पहाड़ियां जहां एक ओर प्राकृतिक सुंदरता और पर्यटन के लिए प्रसिद्ध हैं, वहीं दूसरी ओर यहां के जंगलों में लगने वाली आग से वनों को खतरा पैदा हो रहा है। यह आग लगती है चीड़ के सूखे पत्तों के कारण जो पूरे जंगल में फैले होते हैं। इन्हें पिरुल कहते हैं, यह बहुत जल्दी आग पकड़ लेते हैं जो एक गंभीर समस्या है। लेकिन अब इसी पिरूल को पहाड़ की महिलाएं अपने स्वरोजगार का साधन बना रही हैं। वे इससे स्वदेशी टी–कोस्टर, मैट, गुड़िया, की–चेन और कई तरह के सुंदर हस्तशिल्प तैयार कर रही हैं। जेपी मैठाणी, जिन्होंने 1996 में बॉटनी से एमएससी की, 1997 से पिरूल पर काम कर रहे हैं। उनका उद्देश्य था कि इस समस्या को कम करते हुए इससे आमदनी का जरिया बनाया जाए। आज वे करीब 29 महिलाओं के साथ मिलकर एक ग्रोथ सेंटर चला रहे हैं। इस पहल से न केवल जंगलों में आग का खतरा कम करने में मदद मिल रही है, बल्कि स्थानीय महिलाओं को रोजगार भी मिल रहा है।

समरसता : सनातन धर्म समरसता से ओत प्रोत है। यहां प्रत्येक जीव में, वृक्षों, पर्वतों, नदियों सहित चर–अचर (चराचर) जगत के कण–कण में ईश्वर का वास माना गया है। भारतभूमि पर अनेक तीर्थ ऐसे हैं जहां समाज के सभी वर्गों के लोग एक साथ मिलकर आस्था, परंपरा और श्रद्धा के वातावरण में समरस हो जाते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण सामने आया पवित्र तीर्थ नगरी संभल से जहां मासिक 24 कोसीय परिक्रमा में हजारों श्रद्धालुओं ने उत्साह और भक्ति भाव के साथ भाग लेते हुए पवित्र स्थलों के दर्शन किए और पुण्य अर्जित किया। इस दौरान हजारों श्रद्धालुओं ने संभल की पवित्र भूमि पर स्थित 68 तीर्थों और 19 कूपों की परिक्रमा कर अपनी आस्था व्यक्त की। यात्रा का पहला पड़ाव भुवनेश्वर तीर्थ रहा, जहां रुद्राष्टकम का पाठ किया गया। इसके बाद नैमिषारण्य तीर्थ में बाबा क्षेमनाथ की समाधि पर आरती कर आशीर्वाद लिया गया। तीसरे पड़ाव पर भवानीपुर मंदिर में पूजा–अर्चना की गई और अंत में चंद्रेश्वर महादेव पर जलाभिषेक कर परिक्रमा पूरी की गई। इस प्रकार की परम्पराएं भारत की सनातन समरस सांस्कृतिक विरासत हैं जो जन–जन को भक्ति की माध्यम से एक सूत्र में पिरोती हैं।

पर्यावरण : किसी को सम्मानित करने के लिए हम उपहार के स्थान पर प्रकृति से प्राप्त पुष्प भेंट करते हैं। भारत में पर्यावरण की दृष्टि से पुष्प एवं नैवेद्य देवताओं को भी अति प्रिय है। पुष्प पर्यावरण जागरूकता एवं सम्मान का प्रतीक है तो पुस्तकों से ज्ञान बढ़ता है, इसी सोच के साथ मुरादाबाद के जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने 'एक पुष्प एक पुस्तक' अभियान पर जोर दिया है। उन्होंने अधिकारियों और आम लोगों से अपील की है कि किसी भी शुभ अवसरों एवं औपचारिक भेंट कार्यक्रमों में एक फूल और एक पुस्तक भेंट करने की आदत अपनानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं। अगर लोग पुस्तकें भेंट करेंगे तो हर घर में छोटा पुस्तकालय बन सकता है। प्लास्टिक के फूलों और पुष्पगुच्छ में पॉलीथिन की सज्जा पर्यावरण के लिए हानिकारक होती है। इस मुहीम से पर्यावरण संरक्षण के साथ ही स्वाध्याय की परम्परा को गति मिलेगी।

कुटुंब प्रबोधन : आधुनिक दौर में जहां एकल परिवारों का चलन तेजी से बढ़ रहा है, वहीं देहरादून के जौनसार स्थित कोठा तारली गांव का 39 लोगों का संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों की जीवंत मिसाल बना हुआ है। चंदन सिंह तोमर के इस परिवार में चाचा–चाची, भाई–भाभी, बहनें और बच्चे सभी एक साथ रहते हैं। परिवार के सदस्य एक ही रसोई में भोजन करते हैं, साझा संसाधनों का उपयोग करते हैं और हर जिम्मेदारी मिलकर निभाते हैं। परिवार के सदस्यों का कहना है कि आपसी सहयोग और साझा आय ही उनके मजबूत रिश्तों का आधार है। कोई खेती संभालता है, कोई बागवानी, तो कोई घर और बच्चों की जिम्मेदारी निभाता है। संयुक्त परिवार की यही भावना "मैं" से अधिक "हम" की संस्कृति को मजबूत करती है। यह परिवार केवल खेती नहीं कर रहा, बल्कि भारतीय संस्कृति, सामाजिक समरसता और पारिवारिक एकता का संदेश भी दे रहा है।

नागरिक कर्तव्य : जब बच्चे ही दूसरे जरूरतमंद बच्चों की मदद के लिए आगे आते हैं, तो यह समाज के लिए एक प्रेरणादायक संदेश बन जाता है। गाजियाबाद के गुरुकुल द् स्कूल के विद्यार्थियों ने भी अपना नागरिक कर्तव्य निभाते हुए समाज के निर्धन एवं वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए ऐसा ही सराहनीय कार्य किया है। विद्यालय में 'बुक बडी 2.0' अभियान के तहत जरूरतमंद बच्चों के लिए पांच हजार से अधिक किताबें एकत्रित की गई हैं। यह अभियान अखिल भारतीय एनजीओ सहायता संपर्क के सहयोग से चलाया जा रहा है। बच्चों ने अपनी पसंदीदा किताबों का दान कर शिक्षा बांटने का संदेश दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य गौरव बेदी ने कहा कि सच्ची शिक्षा वही है, जो हमें दूसरों की मदद करना सिखाए। उन्होंने बताया कि दान की गई हर पुस्तक किसी जरूरतमंद बच्चे के जीवन में नई उम्मीद और सीख लेकर आएगी। जल्द ही ये किताबें जरूरतमंद बच्चों तक पहुंचाई जाएंगी। यह पहल न केवल शिक्षा को बढ़ावा दे रही है, बल्कि बच्चों में सेवा और सहयोग की भावना भी विकसित कर रही है। छोटी–सी मदद भी किसी के भविष्य को रोशन कर सकती है। बच्चों में नागरिक कर्तव्य की भावना को बचपन से पोषित करने का यह एक अनुपम उदाहरण है।

आत्मज्ञान एवं आत्मअनुशासन देता है योग

नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

'योग' शब्द संस्कृत धातु 'युज' से बना है, जिसका अर्थ है– जोड़ना या एकता स्थापित करना है। योग प्राचीन भारतीय ऋषि मुनियों और तत्ववेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित एक विशिष्ट आध्यात्मिक प्रक्रिया है। पतंजलि ने (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहा है। योग वशिष्ठ के अनुसार योग वह युक्ति है, जिसके द्वारा संसार सागर से पार जाया जा सकता है। गीता में श्री कृष्णा ने एक स्थल पर कहा है योग : कर्मसु कौशलम् अर्थात कर्मों में कुशलता ही योग है। योग के आठ अंग बताए गए हैं – नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा,ध्यान और समाधि।

इस प्रकार योग भारत की प्राचीन आध्यात्मिक और शारीरिक विद्या है जिसका अर्थ है आत्मा का परमात्मा से मिलान या मन, शरीर और स्वास्थ्य का संतुलन यह एक समग्र जीवन शैली है, जो शारीरिक स्वास्थ्य (आसन) श्वास नियंत्रण (प्राणायाम) और मानसिक शांति (ध्यान) के माध्यम से जीवन को बेहतर बनाती है। योग शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। योग के महत्व व आधुनिक जीवनशैली के प्रतिकूल प्रभाव से स्वयं को मुक्त रखने के उद्देश्य से 2015 से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (International Yoga Day) प्रत्येक वर्ष 21 जून को पूरे विश्व में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को योग के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के प्रति जागरूक करना है। योग भारत की प्राचीन संस्कृति और परंपरा का अमूल्य उपहार माना जाता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को United Nations General Assembly में अपने भाषण के दौरान अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने योग को मानवता के लिए स्वास्थ्य और शांति का मार्ग बताया। योग के महत्व को समझते हुए 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भारत के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव को 170 से अधिक देशों का समर्थन प्राप्त हुआ, जो एक रिकॉर्ड माना गया। 21 जून उत्तरी गोलार्ध का सबसे लंबा दिन (Summer Solstice) होता है। योग परंपरा में इसे आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यह दिन ऊर्जा, संतुलन और सकारात्मक परिवर्तन का प्रतीक माना जाता है। इसलिए 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया।

पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में बड़े स्तर पर योग कार्यक्रम आयोजित किए गए। नई दिल्ली के राजपथ पर आयोजित कार्यक्रम में हजारों लोगों ने एक साथ योग किया, जिसने विश्व रिकॉर्ड भी बनाया। तभी से बड़े उल्लास व उत्साह के साथ हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजित किया जाता है।

नियमित योग व प्राणायाम के अभ्यास से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं स्वस्थ जीवनशैली में आमूलचूल परिवर्तन होता है।

शारीरिक स्वास्थ्य : योग शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाता है। नियमित योग करने से शरीर में लचीलापन बढ़ता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। मोटापा और कई बीमारियों से बचाव होता है तथा रक्त संचार बेहतर होता है।

मानसिक स्वास्थ्य : योग तनाव, चिंता और अवसाद को कम करने में मदद करता है। ध्यान और प्राणायाम मन को शांत और एकाग्र बनाते हैं।

आध्यात्मिक विकास : योग केवल व्यायाम नहीं बल्कि जीवन जीने की कला है। यह आत्मज्ञान, आत्मअनुशासन और आंतरिक शांति प्रदान करता है।

स्वस्थ जीवनशैली का संदेश : योग दिवस लोगों को संतुलित और अनुशासित जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में योग मानसिक और शारीरिक संतुलन बनाए रखने का प्रभावी माध्यम है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस ने भारतीय संस्कृति और आयुर्वेद को वैश्विक पहचान दिलाई है। आज अमेरिका, जापान, फ्रांस, रूस सहित अनेक देशों में योग अत्यंत लोकप्रिय हो चुका है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस केवल एक उत्सव नहीं बल्कि स्वस्थ और संतुलित जीवन का संदेश है। योग मानव जीवन को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है। आज पूरी दुनिया योग को अपनाकर भारत की इस प्राचीन विरासत का सम्मान कर रही है। इसलिए हमें भी योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

'करें योग, रहें निरोग'

मेघालय : सीमांत प्रदेश से सुरक्षा प्रहरी तक

संकलन– डॉ. अनुज, सहायक प्राध्यापक (अतिथि), दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म, दिल्ली विश्वविद्यालय

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अपनी सीमाओं की सुरक्षा करना था, बांग्लादेश भी भारत के लिए एक चुनौती रहा है। लम्बे समय से बांग्लादेशी नागरिक गैरकानूनी रूप से भारत में आने के लिए प्रयासरत रहते हैं। बाद में यह लोग देश की सुरक्षा के लिए चुनौती बनते हैं। सरकार तथा करदाताओं पर भी बोझ बनते हैं। बांग्लादेश में राजनैतिक स्थिरता बनी रहे इसके लिए भारत हर संभव प्रयास करता है। बांग्लादेश में अस्थिरता होने पर भारत में शरणार्थियों की संख्या में भी वृद्धि होती है। मेघालय में भारत-बांग्लादेश सीमा 443 किलोमीटर लंबी है।

15 अप्रैल 2026 : शिलांग पुलिस ने बढ़ती बाइक चोरी और बांग्लादेश में सीमा पार तस्करी पर रोक लगाने के लिए 'नाइट हंटर' अधिकारी तैनात किया। शिलांग में बढ़ती मोटरसाइकिल चोरी और चोरी की गई बाइकों को बांग्लादेश तस्करी किए जाने की घटनाओं को देखते हुए ईस्ट खासी हिल्स पुलिस ने रात के सुरक्षा अभियान को और मजबूत कर दिया है। पुलिस ने शहरभर में पैदल गश्त, मोबाइल पेट्रोलिंग और प्रमुख स्थानों पर रात के समय नाके बढ़ा दिए हैं। इसके अलावा "नाइट हंटर" नामक एक विशेष अधिकारी की तैनाती की गई है, जो पूरी रात शहर में घूमकर विभिन्न थानों की गतिविधियों और कानून–व्यवस्था की निगरानी करता है। ईस्ट खासी हिल्स के एसपी विवेक सिएम ने कहा कि चोरी की कई बाइक संगठित गिरोहों के जरिए बांग्लादेश पहुंचाई जा रही हैं। उन्होंने बताया कि रात में प्रमुख चौराहों और मार्गों पर सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है ताकि चोरी, संदिग्ध गतिविधियों और चोरी के वाहनों की आवाजाही पर रोक लगाई जा सके। पुलिस का उद्देश्य चोरी के साथ–साथ तस्करी के नेटवर्क को भी तोड़ना है।

22 अप्रैल 2026 : मेघालय में खसरे के मामले नहीं, स्वास्थ्य विभाग हाई अलर्ट पर। मेघालय के स्वास्थ्य मंत्री

वाइलाडमिकी शायला ने बताया कि मेघालय में खसरे का कोई मामला नहीं आया है, जबकि पड़ोसी देश बांग्लादेश में फैले खसरे के प्रकोप में 100 से अधिक बच्चों की मौत हो चुकी है। शायला ने बताया कि राज्य सरकार बांग्लादेश सीमा से लगे जिलों पर विशेष नजर रख रही है। उन्होंने कहा, "फिलहाल हम खास तौर पर उन सभी जिलों के साथ लगातार संपर्क में हैं जो बांग्लादेश की सीमा साझा करते हैं। अभी तक वहां से किसी भी तरह की रिपोर्ट नहीं मिली है।" ईस्ट खासी हिल्स प्रशासन ने सार्वजनिक स्वास्थ्य अलर्ट जारी करते हुए निगरानी बढ़ाने और संदिग्ध मामलों की तुरंत सूचना देने का निर्देश दिया है। अधिकारियों ने सभी विभागों, विशेषकर स्कूलों और आईसीडीएस संचालित आंगनवाड़ी केंद्रों, को सतर्क रहने और संभावित संक्रमण रोकने के लिए त्वरित कार्रवाई करने को कहा है। जिला प्रशासन ने लोगों से स्वास्थ्य संबंधी निर्देशों का पालन करने और लक्षण दिखने पर तुरंत सूचना देने की अपील की है।

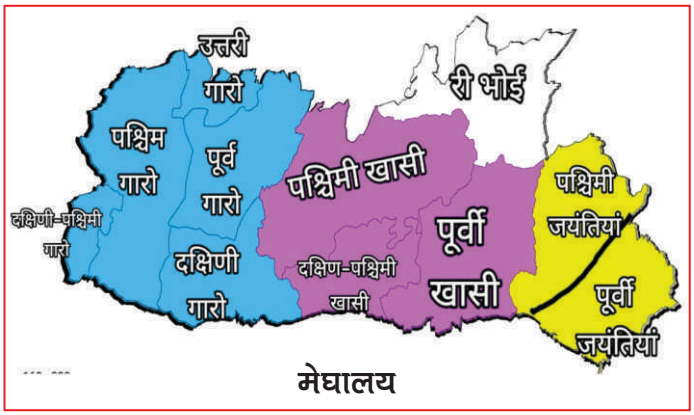

मेघालय

22 अप्रैल 2026 : मेघालय उच्च न्यायालय ने बांग्लादेश जाने वाले खनिज ट्रकों की कड़ी जांच के आदेश दिए। मेघालय उच्च न्यायलय ने एक चिट्ठी के आधार पर स्वतः संज्ञान लेते हुए। भारत से बांग्लादेश पत्थर व खनिज जा रहा है। माननीय न्यायलय ने इस पर तुरंत रोक लगाने के निर्देश दिए हैं साथ यह भी कहा कि यह भी तय किया जाए कि वह खुदाई के लिए लाइसेंस था अथवा नहीं।

30 अप्रैल 2026 : गृह मंत्रालय ने सख्त घुसपैठ विरोधी आदेश जारी किए, मेघालय में हाई अलर्ट। गृह मंत्रालय ने सीमा सुरक्षा बलों और राज्य सरकार को सख्त निर्देश जारी करते हुए भारत–बांग्लादेश सीमा पर अवैध घुसपैठ रोकने के लिए सतर्कता बढ़ाने को कहा है। मेघालय के उपमुख्यमंत्री तथा गृह (पुलिस) विभाग के प्रभारी प्रेस्टोन टिनसॉन्ग ने कहा कि केन्द्र सरकार ने सुरक्षा एजेंसियों को सक्रिय और सतर्क रहने के निर्देश दिए हैं, खासकर उन इलाकों में जहाँ अब भी बाड़ नहीं लगी है। मेघालय में कई हिस्से अब भी बिना बाड़ के हैं। इसका कारण कठिन भौगोलिक परिस्थितियां, भूमि अधिग्रहण की समस्याएं और स्थानीय विरोध बताया जा रहा है, विशेषकर वेस्ट और साउथ गारो हिल्स क्षेत्रों में। इन संवेदनशील इलाकों में अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं और सीमा पर बाकी बचे हिस्सों में बाड़ लगाने का काम तेज किया जा रहा है, ताकि घुसपैठ और सीमा पार तस्करी पर रोक लगाई जा सके।

10 मई 2026 मेघालय : साइबर ठगी, पोंजी स्कीम और सीमा पार वित्तीय अपराध। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के शिलांग कार्यालय ने 'ग्लोबल मीडिया ऐप' धोखाधड़ी मामले में लगभग 1.06 करोड़ रुपये की संपत्तियां अस्थायी रूप से जब्त कीं। यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA), 2002 के तहत की गई। जांच में पता चला कि 'ग्लोबल मीडिया ऐप' एक पोंजी स्कीम की तरह संचालित किया जा रहा था, जिसमें लोगों को विज्ञापन वीडियो देखकर प्रतिदिन आय और अधिक लाभ का लालच दिया जाता था। उपयोगकर्ताओं को VIP सदस्यता योजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित किया गया। ईडी के अनुसार इस योजना के माध्यम से लगभग 45.33 करोड़ रुपये की अवैध कमाई की गई। धन बैंक खातों, यूपीआई और क्रिप्टोकरेंसी वॉलेट्स के जरिए एकत्र किया गया। जांच में यह भी सामने आया कि इस नेटवर्क के तार कंबोडिया और मलेशिया से जुड़े हुए थे। यह मामला साइबर अपराध और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय धोखाधड़ी के बढ़ते खतरे को दर्शाता है।

12 मई 2026 : चुनाव आयोग के एसआईआर के तृतीय चरण के बीच मेघालय में मतदाता सूची में सुधार पर जोर। मेघालय में कई समुदायों को उम्मीद है कि एसआईआर की यह प्रक्रिया लंबे समय से आदिवासी समुदायों की चिंताओं से जुड़े विवादों को दूर करने में मदद करेगी। खासी, जयंतिया और गारो हिल्स के विभिन्न संगठनों ने अक्सर आरोप लगाया है कि अवैध रूप से बसे लोग, खासकर बांग्लादेश से सटे इलाकों में, मतदाता सूचियों में शामिल हो जाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि केवल वास्तविक भारतीय नागरिक ही अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

प्रेम के नाम पर जाल

मुरादाबाद के हिमगिरी स्थित ग्लोबल जिम को लेकर एक चौंकाने वाला खुलासा हुआ। जिम संचालक मुस्लिम युवक सुहैल मलिक पर आरोप है कि उसने एक हिंदू युवती के साथ दुष्कर्म कर उसके साथ अश्लील वीडियो बना ली और धीरे–धीरे ब्लैकमेल कर उससे चार लाख रुपये वसूल लिए। यह सब करने के बाद भी जब युवती उसके चंगुल से आजाद नहीं हुई तो उसने हिम्मत जुटाकर सारी बात पुलिस को बताई। शिकायती पत्र के आधार पर पुलिस ने आरोपी जिम संचालक सुहैल मलिक व उसके साथी सादान सैफी के विरुद्ध दुष्कर्म, ब्लैकमेल कर वसूली, आईटी एक्ट व धमकी की धारा में प्राथमिकी लिखी है। प्राथमिकी की जानकारी के बाद से आरोपी सुहैल मलिक फरार हैं। युवती के अनुसार उसने वर्ष 2022 में जिम जाना शुरू किया था, एक दिन जिम संचालक और ट्रेनर ने मिलकर डरा धमकाकर उसके साथ दुष्कर्म किया और उसकी वीडियो भी बना ली। वीडियो को प्रसारित करने की धमकी देकर आरोपी ब्लैकमेल करने लगा। धीर–धीरे करके चार लाख रुपये से ज्यादा वसूल लिए। विरोध करती तो आरोपित वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित करने की धमकी देता। चार साल तक युवती उसकी प्रताड़ना को सहती रही, जब प्रताड़ना बढती गयी तो उसने पुलिस में शिकायत की। युवती के अनुसार आरोपी सुहैल इसी प्रकार अनेक हिन्दू युवतियों को ब्लैकमेल कर चुका है। कहना गलत नहीं होगा कि जिहादी सोच वाले लोगों का एक ही टारगेट है और वह है हिन्दू युवतियों का शोषण करना। जिम तो मात्र एक जरिया है। यह जिम को जरिया बनाकर संगठित तरीके से सोची–समझी योजना के तहत हिन्दू युवतियों से नजदीकी बढाते हैं और उनका शोषण करते हैं। मुस्लिमों द्वारा संचालित जिम का प्रत्येक हिन्दू को बहिष्कार करना चाहिए और अपने घर की बहन–बेटियां फिटनेस के चक्कर में इन जेहादियों का शिकार होने से बचे उसके लिए पारस्परिक संवाद और जागरूकता बहुत जरुरी है। समाज को विशेषकर महिलाओं को ऐसी घटनाओं से सबक लेने और सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।

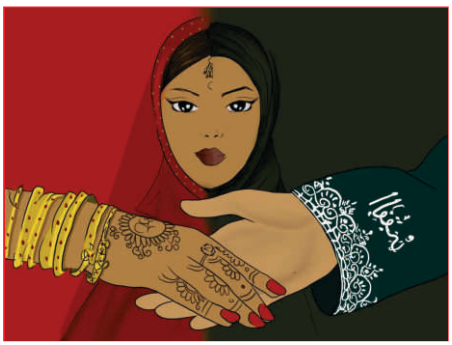

पुरखों की विरासत की ओर

उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में कट्टर मुस्लिम परिवार से ताल्लुक रखने वाली मुस्कान अंसारी को मजहब की दीवारें अपने अंदर कैद न कर सकीं। मुस्कान इस्लाम की तमाम कट्टरपंथी विचारधाराओं को छोड़ अपने पूर्वजों के सनातन धर्म से जुड़ना चाहती थीं। इसी उधेड़बुन में सोशल मीडिया के जरिए उनकी दोस्ती रामपुर के रहने वाले आकाश यादव से हो गई। मुस्कान ने बताया कि उन्हें सनातन धर्म के प्रति आकर्षण था और कान्हा के प्रति लगाव, इसी ने उन्हें अपने पुरखों के सनातन धर्म की ओर लौटने का जज्बा दिया और इसका साधन बना हिन्दू युवक आकाश यादव का मिलना। मुस्कान अंसारी मतान्तरण के बाद अब अपने पुरखों के धर्म में वापस आकर मुस्कान यादव बन गई हैं। मुस्कान की मानें तो वह आठ बहने हैं। उनके अब्बू शादी करते वक्त होने वाले शौहर की उम्र को भी नहीं देखते हैं। वह अधेड़ व्यक्ति से भी बहनों की शादी करने को तैयार हैं, साथ ही तीन तलाक और हलाला जैसी कुप्रथाओं को सुनकर रूहं कांप जाती थीं। मुस्कान को इस्लाम की तमाम कट्टरपंथी सोच भीतर से झकझोर चुकी थीं, इसीलिए उन्होंने इस्लाम को त्याग कर, समावेशिता, सहिष्णुता, वैचारिक स्वतंत्रता और नारी सम्मान के मौलिक स्वभाव वाले अपने पुरखों के सनातन धर्म को अपनाकर घर वापसी की। आज मुस्कान अपने पुरखों के सनातन धर्म को अपनाकर खुश है।

उत्तर प्रदेश में पौधरोपण का बड़ा अभियान

–डेस्क

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस वर्ष एक दिन में 35 करोड़ पौधारोपण का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इसे जनआंदोलन के रूप में आगे बढ़ाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत प्रत्येक आंगनबाड़ी केंद्र में न्यूनतम 05 सहजन के पौधे लगाए जाएं, जबकि स्कूल–कॉलेजों में हर छात्र कम से कम एक पौधा लगाए। मुख्यमंत्री ने गंगा एक्सप्रेस–वे के दोनों किनारों पर बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण को प्राथमिकता देने के भी निर्देश दिए हैं। वर्ष 2009 से 2016 के बीच जहां 51.48 करोड़ पौधे लगाए गए थे, वहीं वर्ष 2017 से 2025 के बीच यह संख्या बढ़कर 242.13 करोड़ हो गई। इसी अवधि में वन एवं वृक्ष आवरण में 3 लाख 38 हजार एकड़ की ऐतिहासिक वृद्धि दर्ज की गई है। 'हरीतिमा' ऐप, जीआईएस मैपिंग, क्यूआर कोड आधारित ट्रैकिंग तथा प्लांटेशन मॉनीटरिंग सिस्टम (पीएमएस) और नर्सरी मैनेजमेंट सिस्टम (एमएमएस) जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से वृक्षारोपण की निगरानी की जा रही है। मुख्यमंत्री ने शहीदों, स्वाधीनता संग्राम सेनानियों व अन्य हुतात्माओं के नाम पर वन/वाटिका के स्थापित करने पर बल दिया, नदियों के किनारे, हाइवे आदि के किनारे भी पौधे लगाए जाएं। इस अभियान को सफल बनाने के लिए जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थानों और आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। (स्रोत – दैनिक जागरण)

गंगा एक्सप्रेस वे का उद्घाटन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 29 अप्रैल को यूपी के हरदोई में प्रदेश के सबसे लंबे गंगा एक्सप्रेस–वे का उद्घाटन किया। जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम ने ऐलान किया कि एक्सप्रेस–वे को हरिद्वार से भी जोड़ा जाएगा। पीएम ने एक्सप्रेस–वे के किनारे पेड़ लगाया। सीएम योगी के साथ एक्सप्रेस–वे पर पैदल भी चले। 594 किलोमीटर लंबा यह एक्सप्रेस–वे मेरठ को प्रयागराज से जोड़ेगा। इससे मेरठ से प्रयागराज की दूरी सिर्फ 6 घंटे में पूरी होगी। अब तक इसमें 11–12 घंटे लगते थे। एक्सप्रेस–वे करीब 37,350 करोड़ रुपए की लागत से 5 साल में बनकर तैयार हुआ है।

इस एक्सप्रेस वे से न केवल दो प्रमुख नगरों की दूरी घटी है बल्कि यह जहाँ–जहाँ से गुजरेगा वहां उन्नति के नए द्वार भी खुलेंगे।

(स्रोत – दैनिक भास्कर)

जनगणना के लिए स्व-गणना अभियान

उत्तर प्रदेश में जनगणना के पहले चरण में 22 मई से हाउस सर्वे शुरू होगा, जो 22 जून तक चलेगा। इससे पहले 7 से 21 मई तक स्वगणना होगी। इन 15 दिनों में लोग अपना पूरा ब्योरा खुद ही ऑनलाइन भर सकेंगे। पहली बार ऐसा होगा, जब जनगणना पूरी तरह डिजिटल माध्यम से करवाई जाएगी। जनगणना कार्य निदेशालय के अधिकारीयों के अनुसार, इस दौरान प्रदेश में रोजाना 10 से 15 लाख की स्वगणना का लक्ष्य है। तय समय सीमा में जनगणना पूरा करने के लिए 5.25 लाख अधिकारियों और कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई जाएगी। इनमें सभी 18 मंडलायुक्त, 75 डीएम, 17 नगर आयुक्त के साथ 600 जिला स्तरीय अधिकारी, 1195 तहसीलदार, 285 मास्टर ट्रेनर और 6939 फील्ड ट्रेनर भी शामिल हैं। जनगणना के दूसरे चरण में फरवरी 2027 से जाति और धर्म से जुड़े सवाल पूछे जाएंगे। इन सवालों का क्या प्रारूप होगा, अभी यह तय नहीं किया गया है। 1 मार्च, 2027 की रात 12 बजे देश की जनसंख्या के आंकड़े जारी किए जाएंगे। (स्रोत – नवभारत टाइम्स)

उत्तर प्रदेश के प्रमुख तीर्थ : सीतापुर का नैमिषारण्य तीर्थ क्षेत्र

- अशोक सिन्हा, उपाध्यक्ष, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

कलियुग में समस्त तीर्थ नैमिष क्षेत्र में ही निवास करते हैं। नैमिषारण्य देश के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है जो कि उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में गोमती नदी के तट पर स्थित है। इस तीर्थ की महिमा का वर्णन मार्कण्डेय पुराण सहित अनेक प्राचीन ग्रंथों में ऋषियों की तपस्थली के रूप में मिलता है। यहाँ अट्ठासी हजार ऋषियों ने तप किया था और सभी ऋषियों ने शोध भी किया था। यह तीर्थ भारत की सनातन संस्कृति के उद्गम स्थल के रूप में स्थापित है। सर्वप्रथम मानव जन्म की उत्पत्ति हेतु मनु-सतरूपा ने यहाँ 23 हजार वर्ष तक कठोर तप किया था। नैमिषारण्य की तपोभूमि पर ऋषि दधीचि ने लोक कल्याण के लिए अपनी अस्थियाँ देवताओं को दान में दी थीं। उनके अस्थियों से बने बज्र से देवताओं ने वृत्तासुर का वध किया था। वेदव्यास ने यहाँ पर चार वेद, छह शास्त्र और अट्ठारह पुराणों की रचना की थी। श्रीरामचरित्र मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस क्षेत्र की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि-

तीरथ वर नैमिष विख्याता।
अति पुनीत साधक सिद्धि दाता।।

वाराह पुराण के अनुसार यह भगवान द्वारा निमिष मात्र में दानवों का संहार करने से यह नैमिषारण्य कहलाया। यह भी कहतें हैं कि इस स्थान पर अधिक मात्रा में पाए जाने वाले फल निमिष के कारण इसका नाम नैमिष पड़ा । एक मत यह भी है कि असुरों के दलन के अवसर पर भगवान विष्णु के चक्र की नैमि नैमिष में गिरी थी। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेख मिलता है कि जब देवताओं का दल महादेव के नेतृत्व में ब्रह्म जी के पास असुरों के आतंक से पीड़ित हो कर पहुँचा तो उन्होंने अपना चक्र छोड़ा और चक्र के गिरने वाले स्थान को अभीष्ट स्थान बताया। चक्र चौदह भुवन घूमता हुआ इसी अरण्य में पतित हो कर पाताल में प्रवेश कर गया । इससे पाताल में एक प्रबल जलधारा की सृष्टि हुई । इससे स्थल जलमग्न हो गया जिसके बाद प्रार्थना करने पर ब्रह्मदेव के आदेश पर देवी ललिता ने उस चक्र को उसी स्थान पर स्थापित कर जलधारा के प्रबल वेग को रोक दिया । चक्र गिरने वाला स्थान आज चक्रतीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। चक्रतीर्थ के अतिरिक्त यहाँ अनेक प्रसिद्ध स्थल जैसे व्यास गद्दी, ललितादेवी मंदिर, भूतनाथ मंदिर, कुशावर्त, ब्रह्म कुंड, जानकी कुंड और पंच प्रयाग आदि दर्शनीय स्थल हैं। नैमिषारण्य का प्रायः प्राचीनतम उल्लेख बाल्मीकि रामायण के युद्धकांड की पुष्पिका में प्राप्त होता है। इसमें उल्लेख है कि लव और कुश ने गोमती नदी के किनारे भगवान राम के अश्वमेध यज्ञ में सात दिनों में वाल्मीकि रचित काव्य का गायन किया था।

ग्रंथों के अनुसार महर्षि शौनक के मन में दीर्घकाल तक ज्ञान सत्र करने की इच्छा थी। उनकी आराधना से प्रसन्न हो कर ब्रह्मा जी ने उन्हें एक चक्र दिया और कहा कि इसे चलाते हुए चले जाओ । जहाँ इस चक्र की नैमि (बाहरी परिधि) गिर जाय उसी स्थल को पवित्र समझ कर आश्रम बना कर ज्ञान बाँटों । शौनक जी के साथ ऋषि भी थे। वे सब उस चक्र को चलाते हुए भारत में घूमने लगे। गोमतीनदी के किनारे एक तपोवन में चक्र की नैमी गिर गई और वहीं यह चक्र भूमि में प्रवेश गिर गया, वह स्थान चक्रतीर्थ कहा जाता है। यह तीर्थ लखनऊ से दो घंटे के समय में कार या टैक्सी से 90.5 किलोमीटर की दूरी तय कर नैमिषारण्य पहुँचा जा सकता है जो सीतापुर जनपद में है। यह तीर्थ गोमती नदी के बाम तट पर स्थित है और पितृ स्थानों में से एक स्थान माना जाता है। यहाँ सोमवती अमावस्या को विशाल मेला लगता है। शौनक जी को इसी तीर्थस्थल पर सूत जी ने 18 पुराणों की कथा सुनाई थी। द्वापर में श्री बलराम जी यहाँ पधारे थे। भूल से उनके द्वारा रोमहर्षण सूतजी की मृत्यु हो गई। बलरामजी ने उनके पुत्र उग्रश्रवा को वरदान दिया कि वे पुराणों के वक्ता होंगे। उन्होंने ऋषियों को सताने वाले राक्षसों का वध किया। सम्पूर्ण भारत की तीर्थयात्रा कर के बलरामजी फिर नैमिषारण्य आए और उन्होंने यहाँ विशाल यज्ञ किया।

एन सी आर के समाचार

संकलन– नन्द किशोर शर्मा, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली शिक्षा विभाग

200वां हिंदी पत्रकारिता दिवस एवं देवर्षि नारद जयंती समारोह

नोएडा : प्रेरणा शोध संस्थान न्यास एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) के संयुक्त तत्वावधान में 3 मई 2026 को 200वां हिंदी पत्रकारिता दिवस एवं देवर्षि नारद जयंती समारोह कल्याण सिंह सभागार, एनआईओएस, सेक्टर– 62 नोएडा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ सलाहकार संपादक डीडी न्यूज श्रीमती रीमा पाराशर रहीं, कार्यक्रम की अध्यक्षता उदय कुमार, सलाहकार संपादक, अमर उजाला ने की एवं मुख्य वक्ता के रूप में माननीय कृपाशंकर, प्रचार प्रमुख उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रीमा पाराशर ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान समय में सभी पत्रकार बंधुओं को नारद जी से सीखना चाहिए कि हम सिर्फ संदेश वाहक नहीं बल्कि सही, तथ्यपूर्ण एवं सत्यता पूर्वक संवेदनशील संदेश जन मानस तक पहुंचाना हमारा पुनीत धर्म है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उदय कुमार ने देवर्षि नारद जी के अनुरूप सत्यम शिवम सुंदरम के आधार पर पत्रकारिता धर्म का निर्वहन एवं सनातन का उल्लेख करते हुए सुंदरकांड और रामचरितमानस का उदाहरण देते हुए पत्रकारों को उनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता श्रीमान कृपा शंकर जी ने संघ की स्वतंत्रता संग्राम और नए भारत के निर्माण में भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि संघ मानता है कि सत्य, स्वाधीनता और समाज जागरण ही पत्रकारिता का मूल धर्म है।

कार्यक्रम में विभिन्न मीडिया संस्थानों के पत्रकार, संवाददाता, इनफ्लुएंसर ब्लॉगर एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित 250 से अधिक लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में प्रोफेसर अखिलेश मिश्रा, अध्यक्ष एनआईओएस ने सभी अतिथियों और आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

जिले के दूसरे ईएसआईसी अस्पताल का शिलान्यास

ग्रेटर नोएडा : मजदूर दिवस पर शुक्रवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ग्रेटर नोएडा वेस्ट के नॉलेज पार्क–5 में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) अस्पताल और जेवर में मुख्यमंत्री कंपोजिट विद्यालय समेत तीन परियोजनाओं का वर्चुअल शिलान्यास और लोकार्पण किया। जिले में कर्मचारी राज्य बीमा निगम का यह दूसरा अस्पताल होगा इसमें 350 चिकित्सा बिस्तर होंगे। श्रमिक दिवस के अवसर पर लखनऊ में आयोजित श्रमवीर गौरव समारोह का ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के ऑडिटोरियम में लाइव प्रसारण किया गया। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष अमित चौधरी, जिलाधिकारी मेधा रूपम, भाजपा जिला अध्यक्ष समेत बड़ी संख्या में अधिकारी और श्रमिक मौजूद रहे। कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) अस्पताल बनाने के लिए ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर नॉलेज पार्क– 5 में 7.2 एकड़ जमीन आवंटित की गई है। सम्बंधित अधिकारी के मुताबिक अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त यह अस्पताल 3 साल में बनकर तैयार होगा तथा इसके निर्माण पर 550 करोड रुपए की लागत आएगी।

नोएडा के दस हजार छात्रों की मेहनत पर फिरा पानी

ग्रेटर नोएडा : नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) का पेपर इस वर्ष फिर लीक होने के बाद परीक्षा रद्द कर दी गई है, इससे जिले के दस हजार से अधिक छात्रों के चेहरों पर मायूसी छा गई। उनकी मेहनत पर पानी फिर गया। छात्रों ने जेईई की तर्ज पर नीट की परीक्षा कराने की मांग की। किसी ने नीट को जेईई की तर्ज पर आयोजित करने के लिए कहा तो किसी ने कंप्यूटर आधारित परीक्षा का सुझाव दिया। जिले में 3 मई को 25 केंद्रों पर कुल 10,786 अभ्यर्थियों ने परीक्षा में हिस्सा लिया था। किन्तु नीट परीक्षा परिणाम घोषित होने से पहले ही परीक्षा रद्द होने से इन सभी अभ्यर्थियों में मायूसी छा गई। वर्षों तक दिन–रात मेहनत कर उन्होंने देश के प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने का सपना सजोया था। ऐसे में परीक्षा रद्द होने और पेपर लीक की खबर सामने आने से विद्यार्थियों के साथ–साथ अभिभावकों में भी भारी निराशा और आक्रोश है। छात्रों ने कहा कि परीक्षा रद्द होना उनके लिए एक बहुत बड़ा मानसिक आघात जैसा है वे लगातार प्रतियोगी परीक्षाओं में हो रही अनियमितताओं का खामियाजा भुगत रहे हैं।

वृंदावन में खुला देश का पहला पूर्ण बालिका सैनिक स्कूल
नारी शक्ति की नई उड़ान

– संकलकर्ता डॉ. नीलम कुमारी

उत्तर प्रदेश में स्थित मथुरा के पावन धाम वृंदावन ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम दर्ज कर ली है। यहां भारत के पहले पूर्ण बालिका सैनिक स्कूल का उद्घाटन किया गया, जिसने देश में महिला सशक्तिकरण और सैन्य शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया है। यह विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित बेटियों को तैयार करने का एक सशक्त मंच बनकर उभरा है। इस सैनिक स्कूल की स्थापना का उद्देश्य लड़कियों को अनुशासन, नेतृत्व, शारीरिक दक्षता और आधुनिक शिक्षा से जोड़ना है ताकि वे भविष्य में भारतीय सेना सहित विभिन्न राष्ट्रीय सेवाओं में अपनी मजबूत भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

इस पहल को 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की बड़ी सफलता माना जा रहा है। वृंदावन का यह विद्यालय आने वाले समय में देशभर की बालिकाओं के लिए प्रेरणा का केंद्र बनेगा और उत्तर प्रदेश को महिला शिक्षा एवं राष्ट्रनिर्माण के क्षेत्र में नई पहचान दिलाएगा।

LEADS 2025 रैंकिंग में उत्तर प्रदेश बना Exemplar राज्य : लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में ऐतिहासिक छलांग

उत्तर प्रदेश ने लॉजिस्टिक्स और औद्योगिक परिवहन व्यवस्था के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल करते हुए LEADS 2025 रैंकिंग में 'Exemplar' श्रेणी प्राप्त की है। यह उपलब्धि राज्य की तेजी से विकसित होती बुनियादी ढांचा नीति और व्यापार अनुकूल वातावरण का प्रमाण मानी जा रही है।

LEADS अर्थात "Logistics Ease Across Different States" केंद्र सरकार द्वारा जारी एक राष्ट्रीय सूचकांक है, जिसमें राज्यों की परिवहन, वेयरहाउसिंग, सड़क संपर्क, औद्योगिक आपूर्ति श्रृंखला और निवेश अनुकूल व्यवस्थाओं का मूल्यांकन किया जाता है। उत्तर प्रदेश का शीर्ष श्रेणी में पहुंचना इस बात का संकेत है कि राज्य अब उद्योगों और व्यापारिक गतिविधियों के लिए सबसे पसंदीदा गंतव्यों में शामिल हो चुका है। राज्य सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में एक्सप्रेसवे, डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर, मल्टी–मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क और औद्योगिक गलियारों के निर्माण पर विशेष बल दिया है। पूर्वांचल, बुंदेलखंड और गंगा एक्सप्रेसवे जैसी परियोजनाओं ने माल परिवहन को तेज और किफायती बनाया है। इससे

निवेशकों का विश्वास भी लगातार बढ़ा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश अब "बीमारू राज्य" की छवि से बाहर निकलकर देश के विकास इंजन के रूप में उभर रहा है। इन परियोजनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उत्तर प्रदेश केवल योजनाएं नहीं बना रहा, बल्कि उन्हें धरातल पर उतारकर विकास की नई कहानी लिख रहा है।

पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी, तिरोभाव दिवस - 2 जून 1990

–डेस्क

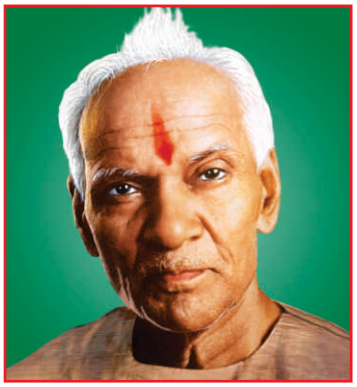

भारतीय पुनर्जागरण के महान अग्रदूत, युग ऋषि और समाज सुधारक पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने गायत्री साधना को आधार बनाया और समाज के आध्यात्मिक जागरण हेतु अखिल विश्व गायत्री परिवार की स्थापना की। आपने लगभग साढ़े तीन हजार पुस्तकों के माध्यम से समस्त समाज को जाग्रत करने का काम किया। समाज को मार्गदर्शन देने के लिए उन्होंने अखण्ड ज्योति नाम की पत्रिका निकाली। पण्डित श्रीराम शर्मा ने सिद्ध किया कि भारतीय आध्यात्मिक विरासत मंत्र–जप और यज्ञ केवल कर्मकांड नहीं हैं, बल्कि इनका गहरा वैज्ञानिक प्रभाव शरीर और मस्तिष्क पर पड़ता है। उन्होंने ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना की, जो आज भी इस क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध करता है। स्वाधीनता सेनानी के रूप में उन्होंने कई बार जेल यात्राएं भी कीं। ऐसे महान विचारक आध्यात्मिक पुनर्जागरण के अग्रदूत पण्डित श्री राम शर्मा आचार्य जी को कोटि–कोटि नमन।

भगवान बिरसा मुण्डा बलिदान दिवस - 09 जून 1900

भगवान बिरसा मुंडा

बिरसा मुंडा वनवासी लोकनायक थे। क्रांतिवीर बिरसा मुंडा ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध जनजातीय समाज में एक बड़ा आन्दोलन खड़ा किया। एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का खंडन किया। लोगों को हिंसा और मादक पदार्थों से दूर रहने की शिक्षा दी। उन्होंने ईसाई मिशनरी के द्वारा कराये जा रहे मतान्तरण का डटकर विरोध किया। मतान्तरित हुए वनवासी समुदाय के लोगों की घर वापसी कराई और उन्हें उनकी सनातन जड़ों से जोड़ा। उन्होंने छोटा नागपुर क्षेत्र के वनवासी समुदाय का आध्यात्मिक और राजनीतिक नेतृत्व किया। अंग्रेज उनके बढ़ते प्रभाव से डर गये और उन्हें अपने लिए चुनौती मानने लगे। एक योजना बनाकर अंग्रेजों ने उन्हें धोखे से पकड़ लिया और जेल में विष देकर उनकी हत्या कर दी।

राम प्रसाद 'बिस्मिल' जयन्ती - 11 जून 1897

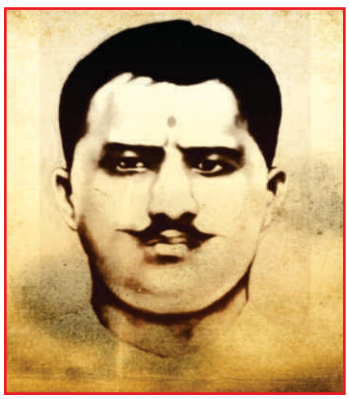

रामप्रसाद बिस्मिल एक महान क्रांतिकारी, उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक एवं साहित्यकार थे। राम प्रसाद बिस्मिल हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन नामक क्रांतिकारी दल के सदस्य थे। इन्होने इस दल में रहते हुए माँ भारती को अंग्रेजों से मुक्त कराने हेतु सशस्त्र क्रान्ति को गति दी थी। ब्रिटिश तंत्र को हिलाकर रख देने वाली काकोरी क्रांतिकारी घटना में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। इनके लिखे गीत 'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजु ए कातिल में है' ने अनेक युवाओं को अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने को प्रेरित किया था। 19 दिसम्बर 1927 को वेदमंत्रों का पाठ करते हुए उन्होंने फांसी के फंदे को चूमकर मातृभूमि के लिए अपना अनुपम बलिदान दिया।

17 जून 1674, पुण्यतिथि - माता जीजाबाई भोंसले

राजमाता जीजाबाई भारतीय इतिहास की ऐसी महानायिका थीं जिन्होंने मुस्लिम आक्रान्ताओं के षड्यंत्रों को भांपकर अपने पुत्र छत्रपति शिवाजी महाराज के व्यक्तित्व को इस तरह से गढ़ा कि उन्होंने इन विधर्मियों को सफल नहीं होने दिया। यह माता जीजाबाई के संस्कारक्षम पालन पोषण का ही परिणाम था कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुगलों के इस्लामी साम्राज्य विस्तार के स्वप्न को चूर चूर कर हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की। छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन की दिशा निर्धारित करने में माता जीजाबाई का सबसे अधिक प्रभाव था। उन्होंने बालक शिवाजी को महान वीर योद्धा और स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र का छत्रपति बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति, योग्यता और बुद्धिमत्ता लगा दी। उन जैसी महान नारियों ने इस राष्ट्र के धर्म और संस्कृति के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनका जीवन त्याग, साहस, राष्ट्रभक्ति और उच्च आदर्शों से परिपूर्ण था। वे केवल एक महान पुत्र की माता ही नहीं थीं, बल्कि एक दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता भी थीं, जिन्होंने अपने संस्कारों से इतिहास की दिशा बदल दी। उन्होंने बालक शिवाजी को बचपन से ही रामायण, महाभारत और वीरता की प्रेरणादायक कथाएँ सुनाकर उनमें राष्ट्रप्रेम, न्यायप्रियता और स्वाभिमान की भावना उत्पन्न की। उन्होंने युवा शिवाजी को यह सिखाया कि अन्याय के सामने कभी झुकना नहीं चाहिए और सदैव धर्म और सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए। इन्हीं संस्कारों ने आगे चलकर युवा शिवाजी के मन में "स्वराज्य" की भावना का संचार किया। यही विचार आगे चलकर हिन्दू साम्राज्य की स्थापना का आधार बना। जीजाबाई केवल एक आदर्श माता ही नहीं, बल्कि एक सक्षम प्रशासक भी थीं।

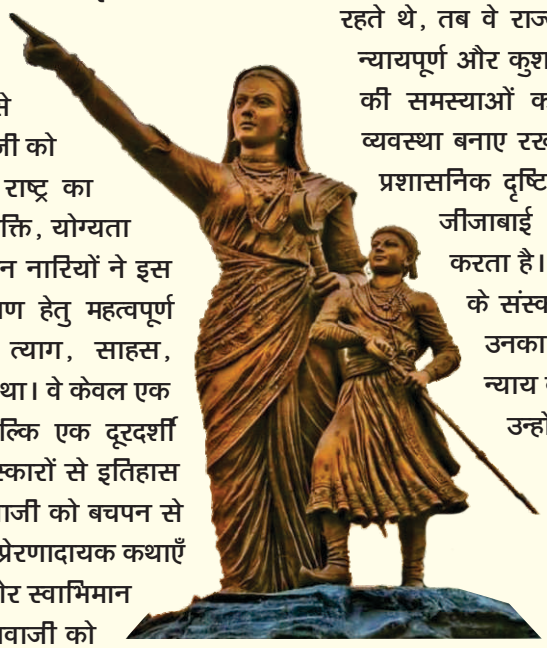

जब छत्रपति शिवाजी महाराज युद्ध अभियानों में व्यस्त रहते थे, तब वे राज्य का संचालन करती थीं। उन्होंने न्यायपूर्ण और कुशल शासन का परिचय देते हुए प्रजा की समस्याओं का समाधान किया और राज्य में व्यवस्था बनाए रखी। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे प्रशासनिक दृष्टि से भी अत्यंत दक्ष थीं। राजमाता जीजाबाई का जीवन अनेक आदर्श प्रस्तुत करता है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि एक माँ के संस्कार राष्ट्र का भविष्य गढ़ सकते हैं। उनका जीवन राष्ट्रभक्ति, धैर्य, साहस और न्याय के प्रति अटूट विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने धैर्य और संकल्प को बनाए रखा और अपने उद्देश्य से कभी विचलित नहीं हुई।

18 जून 1858, बलिदान दिवस : रानी लक्ष्मीबाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना थीं। उन्होंने न केवल भारत की बल्कि विश्व की महिलाओं को गौरवान्वित किया। भारत को ब्रिटिश दासता से मुक्त करने के लिए सन् 1857 में राष्ट्रव्यापी प्रयास हुआ। यह प्रयास इतिहास में भारत का प्रथम स्वतन्त्रता समर कहलाता है। तब सम्पूर्ण देश में आम–जन–मानस से लेकर, अनेक जमींदारों और राजा–महाराजाओं ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी और ग्वालियर क्षेत्र में इस विद्रोह का नेतृत्व किया था। अंग्रेजों की राज्य हड़प नीति का विरोध करते हुए उन्होंने घोषणा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। उन्होंने अपने शौर्य से अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे कर दिए थे। उन्होंने अपने राज्य की महिलाओं का भी दुर्गा दल बनाकर उन्हें सैन्य प्रशिक्षण देकर वीरांगनाओं के रूप में विकसित किया था। अंग्रेज़ों की शक्ति का सामना करने के लिए उन्होंने नये सिरे से सेना का संगठन किया। और सुदृढ़ मोर्चाबंदी करके अपने सैन्य कौशल का परिचय दिया था। अंग्रेजों से हुए युद्ध में अदम्य शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए वह 18 जून 1858 को वीरगति को प्राप्त हुई। उनकी वीरता को देखकर होकर ब्रिटिश सेनापति ह्यूरोज ने भी उनकी प्रशंसा की थी।

– कुमारी श्रेयांशी

भारतीय संस्कृति व खेल विरासत को मिलेगी अंतरराष्ट्रीय मंच पर नई पहचान

भारत में प्रस्तावित कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 को लेकर खेल प्रेमियों के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आई है। केंद्रीय खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने स्पष्ट कर दिया है कि 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों में क्रिकेट और हॉकी को शामिल किया जाएगा। उनके इस बयान के बाद देशभर के खिलाड़ियों और खेल प्रशंसकों में उत्साह की लहर दौड़ गई है।

खेल मंत्री ने कहा कि भारत की मजबूत खेल परंपरा और वैश्विक पहचान को ध्यान में रखते हुए क्रिकेट और हॉकी जैसे लोकप्रिय खेलों को प्राथमिकता दी गई है। क्रिकेट भारत का सबसे लोकप्रिय खेल माना जाता है, वहीं हॉकी देश का गौरवशाली व पारंपरिक राष्ट्रीय खेल है। इन दोनों खेलों की मौजूदगी से प्रतियोगिता का आकर्षण कई गुना बढ़ने की उम्मीद है। इससे भारतीय संस्कृति और खेल विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर नई पहचान मिलेगी। कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 को भारत की खेल शक्ति, संस्कृति और आधुनिक आयोजन क्षमता के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है।

2027 में भारत में फॉर्मूला 1 रेस की संभावित वापसी

फॉर्मूला वन रेस की भारत में वापसी की खबर ने मोटरस्पोर्ट प्रेमियों में उत्साह की नई लहर पैदा कर दी है। लगभग 14 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद 2027 में भारत में फॉर्मूला वन रेस आयोजित होने की संभावना जताई जा रही है। इस दिशा में खेल मंत्रालय और संबंधित संस्थाओं ने महत्वपूर्ण पहल शुरू कर दी है। भारत में आखिरी बार फॉर्मूला वन रेस का आयोजन ग्रेटर नोएडा के बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में हुआ था। अब सरकार का प्रयास है कि आधुनिक सुविधाओं और बेहतर प्रबंधन के साथ इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता को दोबारा देश में लाया जाए। इससे भारत की वैश्विक खेल पहचान और मजबूत होगी।

शतरंज में भारतीय युवाओं का विश्वभर में जलवा

आर. प्रज्ञानंद और डी. गुकेश ने अंतरराष्ट्रीय शतरंज जगत में भारत की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। कम उम्र में ही दोनों खिलाड़ियों ने विश्व स्तरीय प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन कर यह साबित कर दिया है कि भारत अब शतरंज की महाशक्ति बनता जा रहा है। प्रज्ञानंद ने कई शीर्ष खिलाड़ियों को हराकर अपनी रणनीतिक क्षमता का परिचय दिया है, जबकि गुकेश ने लगातार शानदार प्रदर्शन से विश्व रैंकिंग में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया। उनकी सफलता के पीछे वर्षों की मेहनत, अनुशासन और मानसिक दृढ़ता का बड़ा योगदान है।

भारत में शतरंज की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। स्कूलों और अकादमियों में बड़ी संख्या में बच्चे इस खेल को अपनाने लगे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि विश्वनाथन आनंद के बाद अब नई पीढ़ी भारतीय शतरंज को नई दिशा दे रही है। इन युवा खिलाड़ियों की उपलब्धियां भारत के लिए गर्व का विषय हैं और वे आने वाले वर्षों में विश्व चैंपियन बनने की क्षमता रखते हैं।

युवा परिप्रेक्ष्य में हिंदुत्व : राष्ट्रवाद, संस्कृति और राजनीतिक चेतना

हिंदुत्व : सांस्कृतिक चेतना और समावेशी दृष्टिकोण - हिंदुत्व का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक गौरव को पुनर्जीवित करना है। यह भारत की सभ्यता, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी एक व्यापक अवधारणा है। हिंदुत्व आज केवल सांस्कृतिक विचार नहीं, बल्कि सामाजिक और वैचारिक बहस का महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। भारतीय परंपरा में "धर्म" का अर्थ केवल रिलिजन नहीं है, बल्कि जीवन और समाज को संतुलित रखने वाली व्यवस्था है। धर्म यहाँ नैतिकता, कर्तव्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का व्यापक सिद्धांत है। इसी कारण अनेक विद्वान हिंदुत्व को "जीवन जीने की पद्धति" के रूप में भी देखते हैं। भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति सम्मान, अतिथि–सत्कार की परंपरा, गुरु का आदर तथा निस्वार्थ सेवा जैसी परंपराएँ हिंदुत्व की मूल भावना को अभिव्यक्त करती हैं।

–राजनन्दिनी, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म

'हिंदुत्व' - धर्म से परे, जीवन जीने का एक भारतीय अंदाज : हिंदुत्व को यदि सरल शब्दों में समझें, तो यह भारतीय सभ्यता का वह दर्पण है, जिसमें हमें अपनी जड़ें दिखाई देती हैं। इसमें वेदों का ज्ञान है, योग का अनुशासन है, आयुर्वेद की शक्ति है और 'वसुधैव कुटुंबकम्' जैसी उदार सोच समाहित है। यह हमें सिखाता है कि हम चाहे आधुनिकता की कितनी भी ऊँची उड़ान भर लें, हमारी वास्तविक ताकत हमेशा हमारी जड़ों, अर्थात हमारे संस्कारों में ही निहित रहती है।

आज का युवा हिंदुत्व को केवल पुराने रीति–रिवाजों के रूप में नहीं, बल्कि अपनी पहचान और स्वाभिमान के रूप में देख रहा है। सोशल मीडिया के इस दौर में भी यदि नई पीढ़ी अपने इतिहास, शास्त्रों और कलाओं की ओर लौट रही है, तो यह इस विचार की प्रासंगिकता का प्रमाण है। यह हमें सिखाता है कि अपनी भाषा, अपने त्योहारों और अपने पूर्वजों के योगदान पर गर्व करना संकीर्णता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास का प्रतीक है।

– छाया सिंह, आईआईएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस, ग्रेटर नोएडा

हिंदुत्व : उद्भव, विचार और राष्ट्रचेतना - हिंदुत्व' शब्द की वैचारिक पृष्ठभूमि भारतीय राष्ट्रवादी चेतना से जुड़ी हुई मानी जाती है। इसके प्रारंभिक सांस्कृतिक संकेत बंगाल के महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ' में दिखाई देते हैं, जिसने भारतीय समाज में राष्ट्रभावना और सांस्कृतिक जागरण को नई दिशा प्रदान की। सावरकर की 1923 में प्रकाशित पुस्तक 'हिंदुत्व ' हिंदू कौन है? इसी के बाद 'हिंदुत्व' शब्द व्यापक रूप से प्रचलित हुआ। यदि हिंदुत्व के विकास की चर्चा की जाए, तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों तथा उससे जुड़े राष्ट्रवादी नेताओं की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है। भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने राष्ट्रीय एकता और अखंड भारत की अवधारणा को मजबूत करने के उद्देश्य से जम्मू–कश्मीर में विशेष प्रावधानों का विरोध किया और प्रसिद्ध नारा दिया– "एक देश में दो विधान, दो निशान और दो प्रधान नहीं चलेंगे"। इन प्रसंगों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदुत्व को कई लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता और सभ्यतागत चेतना से जोड़कर देखते हैं।

– संदीप, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म

हिंदुत्व : भारतीय ज्ञान, संस्कृति और जीवन-दृष्टि - यदि हिंदुत्व की व्यापक दृष्टि से चर्चा की जाए, तो भारत ज्ञान, कला, संस्कृति और विविध विचारधाराओं का संगम रहा है। यही कारण है कि भारत प्राचीन काल से ही विश्वभर में अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध रहा है। महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट द्वारा रचित आर्यभटीय में न केवल शून्य (मतव) की अवधारणा को स्पष्ट किया गया, बल्कि दशमलव प्रणाली, π (पाई) का सटीक मान, ग्रहों की गति, ग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या तथा त्रिकोणमिति जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों का विकास भी हुआ। गणित, खगोलशास्त्र, और ज्योतिष विद्या के क्षेत्र में उनका योगदान भारतीय ज्ञान–विज्ञान की उन्नत परंपरा को दर्शाते हैं। यदि हम दार्शनिक विचारों की चर्चा करें, तो जीवन जीने की गहन कला और संतुलित जीवन–दृष्टि का सर्वोत्तम मार्गदर्शन श्रीमद्भगवद्गीता में प्राप्त होता है। इस प्रकार हिंदुत्व को केवल धार्मिक पहचान तक सीमित न मानकर भारतीय ज्ञान, संस्कृति, नैतिकता और जीवन–दृष्टि की व्यापक परंपरा के रूप में समझा जा सकता है।

–अन्नू, दिल्ली स्कूल ऑफ जर्नलिज्म

खेतों के काम का यह काला सोना

–डेस्क

उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले से आत्मनिर्भरता की एक ऐसी तस्वीर सामने आई है, जहां महिलाओं का एक समूह जैविक खेती की दिशा में बड़ा काम कर रहा है। मुरादाबाद के ठाकुरद्वारा ब्लॉक में संचालित गंगा शक्ति स्वयं सहायता समूह बड़े पैमाने पर केंचुआ खाद तैयार कर रहा है। बड़ी बात यह है कि यह समूह अब तक लगभग 1200 महिलाओं को भी वर्मी कंपोस्ट बनाने की बारीकियां निरूशुल्क सिखा चुका है। यहां से ट्रेनिंग लेने के बाद कई महिलाएं अब खुद भी लाभ कमा रही हैं। इस समूह के साथ वर्तमान में 50 महिलाएं सीधे तौर पर जुड़कर काम कर रही हैं। इनके द्वारा तैयार की गई केंचुआ खाद की मांग केवल मुरादाबाद तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उत्तराखंड के देहरादून समेत कई दूर–दराज के इलाकों में है। इन महिलाओं के लिए यह जैविक खाद काला सोना है। यह समूह पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।

मुरादाबाद की बैलगाड़ी की खाड़ी देशों में धूम

पीतल नगरी मुरादाबाद के पीतल के बर्तन और सजावटी सामान देश–विदेश के कोने–कोने में एक्सपोर्ट किए जाते हैं। मुरादाबाद के कारीगर अपनी कलाकारी से पीतल के उत्पादों में जान फूंक देते हैं। मुरादाबाद की पीतल कला हमारे देश की सांस्कृतिक विरासत है और भारत की सांस्कृतिक विरासत की आज दुनिया दीवानी है। आजकल मुरादाबाद से अनेक प्रकार के आर्ट इफेक्ट्स विदेशों में भेजे जाते हैं। इन्हीं में से एक है नक्काशीदार पीतल की बैलगाड़ी। लोग इसे अपने घरों और दफ्तरों को सजाने के लिए खूब पसंद कर रहे हैं। सबसे ज्यादा ऑर्डर खाड़ी देशों से मिल रहे हैं। यह बैलगाड़ी 4 इंच से 14 इंच तक अलग–अलग साइज में तैयार की जा रही है। दफ्तरों, होटलों और घरों के ड्राइंग रूम में इसे रखना स्टेटस सिंबल माना जाने लगा है। इसका बाजार भाव करीब 1550 रुपये प्रति किलो के आसपास है। देश की सांस्कृतिक विरासत को सहेजती यह कला अनेक कलाकारों को आत्मनिर्भर बना रही है।

चम्पावत - कैफे से सशक्त होती ग्रामीण महिलाएं

उत्तराखण्ड के चम्पावत के 'जय भगवती मां स्वयं सहायता समूह' की पांच महिलाएं मिलकर हिलांस कैफे का संचालन कर रही हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद इन्होंने अपने संकल्प, मेहनत और नए विचारों से एक नई दिशा बनाई है। यहां पिरूल से बनी टोकरियां, जूट बैग और आंवला कैंडी, घर के बने अचार, मंडुवे के पौष्टिक बिस्किट जैसे कई खाद्य उत्पाद भी तैयार कर विक्रय किये जा रहे हैं। हिलांस कैफे में आने वाले लोगों को केवल स्वादिष्ट भोजन ही नहीं, बल्कि गांव का सच्चा आतिथ्य भी मिलता है। यह कैफे न केवल संस्कृति को सहेज रहा है, बल्कि स्थानीय संसाधनों का सही उपयोग भी सिखा रहा है। यह स्वयं सहायता समूह हर महीने लगभग 25 हजार रुपये तक की आय अर्जित कर रहा है, जिससे इन महिलाओं के परिवार मजबूत हो रहे हैं और उनके बच्चों का भविष्य भी बेहतर बन रहा है। अब ये महिलाएं अपने परिवार की जरूरतों को आत्मनिर्भर होकर पूरा कर रही हैं।

शास्त्रार्थ इन इंडिया : मेथोडोलॉजी एंड एप्लीकेशंस

– डॉ. अनिल कुमार निगम, वरिष्ठ पत्रकार

भारतीय ज्ञान परंपरा और शिक्षा के उपनिवेश–मुक्तिकरण (Decolonization) पर बढ़ती बहसों के बीच शास्त्रार्थ इन इंडिया : मेथोडोलॉजी एंड एप्लीकेशंस एक महत्वपूर्ण और चिंतन प्रेरक कृति के रूप में सामने आती है। मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स द्वारा प्रकाशित यह 379 पृष्ठों की हार्ड बाउंड पुस्तक, जिसकी कीमत ₹1995 है, शास्त्रार्थ की भारतीय परंपरा को संचार, मीडिया अध्ययन, शोध पद्धति, दर्शन और समकालीन सामाजिक विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत करती है।

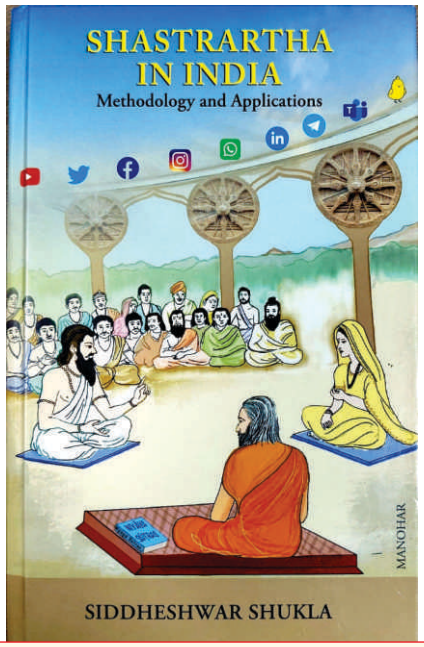

पुस्तक के लेखक वरिष्ठ पत्रकार सिद्धेश्वर शुक्ल ने इसको चार सुव्यवस्थित भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग में शास्त्रार्थ की वैचारिक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, जिसमें इसे भारतीय ज्ञान प्रणाली का अभिन्न अंग बताते हुए संवाद, तर्क और आलोचनात्मक चिंतन की परंपरा के रूप में समझाया गया है। द्वितीय भाग में शास्त्रार्थ के ऐतिहासिक विकास को मंत्र युग, जल्प युग, भक्ति युग और आधुनिक युग के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। यह खंड भारतीय सभ्यता के साथ–साथ बौद्धिक संवाद की परंपराओं के विकास को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

तृतीय भाग पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण और शोधपरक हिस्सा है, जिसमें शास्त्रार्थ की कार्यप्रणाली और वैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या की गई है। लेखक ने ऋग्वेद से लेकर आधुनिक काल तक शास्त्रार्थ के उपागम के विकास को विस्तार से समझाया है। पुस्तक यह स्थापित करती है कि शास्त्रार्थ केवल आध्यात्मिक या दार्शनिक विमर्श नहीं था, बल्कि तर्क, प्रमाण और संवाद पर आधारित एक सुव्यवस्थित बौद्धिक प्रक्रिया भी थी। चतुर्थ भाग में शास्त्रार्थ की समकालीन प्रासंगिकता पर चर्चा की गई है, जिसमें मीडिया साक्षरता, संचार कौशल, कंटेंट एनालिसिस व मॉस कम्युनिकेशन थ्योरी जैसे विषय शामिल हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारतीय शिक्षा प्रणाली को उपनिवेशवादी प्रभावों से मुक्त करने की दिशा में एक व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। लेखक का मानना है कि भारतीय संवाद परंपराओं को पुनः केंद्र में लाकर आलोचनात्मक चिंतन, संदर्भ आधारित समझ और बौद्धिक आत्मनिर्भरता को विकसित किया जा सकता है। आज के ध्रुवीकृत मीडिया परिवेश में शास्त्रार्थ का नैतिक और तार्किक ढांचा अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

पुस्तक में शास्त्रार्थ की तुलना पश्चिमी संचार सिद्धांतों, शोध पद्धतियों, कंटेंट एनालिसिस, आलोचनात्मक अध्ययन, विधिक प्रक्रियाओं और डिकंस्ट्रक्शन जैसी आधुनिक अवधारणाओं से भी की गई है। विशेष रूप से न्याय सूत्र के सोलह पदार्थों को चार श्रेणियों – तर्क निर्माण, तार्किक त्रुटियों की पहचान, शास्त्रार्थ के उपागम तथा निष्कर्ष में वर्गीकृत करना अत्यंत प्रभावशाली है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक मीडिया और संचार अध्ययन के लिए भी कितनी उपयोगी है।

सरल किंतु शोधपरक भाषा में लिखी गई यह पुस्तक शोधार्थियों, पत्रकारों, शिक्षकों, मीडिया विद्यार्थियों और भारतीय दर्शन में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। यह पुस्तक यह भी स्मरण कराती है कि भारतीय बौद्धिक परंपरा सदैव संवाद, तर्क और विचार–विमर्श पर आधारित रही है, न कि अंधविश्वास पर।

कुल मिलाकर, शास्त्रार्थ इन इंडिया : मेथोडोलॉजी एंड एप्लीकेशंस भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक समय की आवश्यकताओं के बीच एक प्रभावी सेतु का कार्य करती है। यह पुस्तक न केवल शास्त्रार्थ की परंपरा को पुनर्जीवित करती है, बल्कि उसे समकालीन समाज और अकादमिक विमर्श के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध करती है।

पुस्तक विवरण

लेखक : सिद्धेश्वर शुक्ल

प्रकाशक : मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

मूल्य : ₹1995

पृष्ठ : 379

राजा शिवाजी

फिल्म समीक्षा -डॉ. अनुपमा भारद्वाज

निर्देशक एवं लेखक : रितेश देशमुख
मुख्य कलाकार : रितेश देशमुख, संजय दत्त, अभिषेक बच्चन, विद्या बालन
संगीत : अजय-अतुल
सिनेमेटोग्राफी : संतोष सिवान

"राजा शिवाजी" केवल एक ऐतिहासिक फिल्म नहीं, बल्कि छत्रपति शिवाजी महाराज के साहस, स्वाभिमान और दूरदर्शी नेतृत्व को बड़े पर्दे पर भव्य श्रद्धांजलि देने का प्रयास है। रितेश देशमुख ने इस फिल्म में अभिनेता, निर्देशक और लेखक तीनों भूमिकाओं में अपनी मेहनत और समर्पण स्पष्ट रूप से दिखाया है। यह फिल्म भावनात्मक रूप से दर्शकों से गहरा जुड़ाव बनाने में सफल रहती है, भले ही इसमें कुछ सिनेमाई कमियाँ भी हों।

फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसका भव्य प्रस्तुतीकरण है। विशाल युद्ध दृश्य, किले, वेशभूषा और शानदार सिनेमेटोग्राफी दर्शकों को मराठा साम्राज्य के दौर में ले जाती है। संतोष सिवान का कैमरा वर्क बहुत सराहनीय है। कई दृश्य इतने प्रभावशाली हैं कि वे लंबे समय तक दर्शकों के मन में बने रहते हैं। फिल्म का संगीत भी इसकी आत्मा जैसा प्रतीत होता है। अजय-अतुल का बैकग्राउंड स्कोर कई दृश्यों को और अधिक भावुक तथा प्रभावशाली बना देता है। विशेषकर युद्ध और प्रेरणादायक दृश्यों में संगीत फिल्म को एक अलग ऊँचाई देता है।

रितेश देशमुख ने शिवाजी महाराज की भूमिका को केवल एक योद्धा के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, बुद्धिमान और जननायक शासक के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनके अभिनय में गंभीरता और आत्मविश्वास दिखाई देता है। संजय दत्त ने अफजल खान के रूप में दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है और उनके दृश्यों में तनाव और प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। अभिषेक बच्चन और विद्या बालन सहित सहायक कलाकारों ने भी अपने अभिनय से कहानी को मजबूती प्रदान की है।

हालाँकि फिल्म पूरी तरह दोषरहित नहीं है। लगभग तीन घंटे की लंबाई कुछ जगहों पर दर्शकों की परीक्षा लेती है। फिल्म की गति कुछ हिस्सों में धीमी हो जाती है और संपादन को अधिक सटीक बनाया जा सकता था। कुछ दृश्य अनावश्यक रूप से लंबे महसूस होते हैं। इसके अलावा, विजुअल इफेक्ट्स को लेकर भी मिश्रित प्रतिक्रियाएँ सामने आई हैं। कुछ दर्शकों को फिल्म का तकनीकी पक्ष शानदार लगा, जबकि कुछ ने माना कि कुछ दृश्य अपेक्षित स्तर तक प्रभावशाली नहीं बन पाए।

इसके बावजूद, फिल्म का भावनात्मक प्रभाव काफी मजबूत है। दर्शकों के बीच इसे लेकर गर्व और देशभक्ति की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यही कारण है कि बॉक्स ऑफिस पर भी फिल्म को अच्छा प्रतिसाद मिला है। कई दर्शकों ने इसे केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति से जुड़ने का अनुभव बताया है।

कुल मिलाकर "राजा शिवाजी" एक ऐसी फिल्म है जो तकनीकी दृष्टि से भले ही पूर्ण न हो, लेकिन अपनी भावना, संगीत, अभिनय और ऐतिहासिक गर्व के कारण प्रभाव छोड़ने में सफल रहती है। इतिहास, वीरता और भव्य सिनेमाई अनुभव पसंद करने वाले दर्शकों के लिए यह फिल्म निश्चित रूप से देखने योग्य है।

आज की युवा पीढ़ी के लिए यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि प्रेरणा का स्रोत भी है। यह उन्हें साहस, नेतृत्व, राष्ट्रप्रेम, आत्मसम्मान और कठिन परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहने की सीख देती है। छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन युवाओं को यह संदेश देता है कि दूरदर्शिता, अनुशासन और अपने संस्कारों पर गर्व करके ही एक सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

भारत की खेती में एआई : स्मार्ट फार्मिंग का नया दौर

–आर्या कुमारी (छात्रा, आईएमएस, गाजियाबाद)

कृषि प्रधान देश कहलाने वाला भारत, जिसकी विविधताओं में खेती का स्थान सबसे महत्वपूर्ण और प्राचीन माना जाता है, जहाँ आज भी करोड़ो लोगों की जीविका खेती पर निर्भर है। तकनीक की इस आधुनिक दुनिया में, भारतीय कृषि क्षेत्र विकास की ओर अपनें सरपट कदम लिये तेजी से दौड़ना सीख रहा है। पारंपरिक खेती की दुनिया अब ए.आई. की दुनिया में तबदील हो रही है।

इमेज रिकग्निशन ए.आई. तकनीक के उपयोग से मिट्टी कि जांच, एवं बीज का चयन सही ढ़ग से करने में मदद मिलती है। यह तकनीक अनाज में उपज रहे कीड़े और बीमारीयों की पहचान तस्वीरों को स्कैन कर समय रहते उपचार के लिये आगाह करती है। मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, सैटेलाइट इमेजरी जैसे ए.आई. मौसम का अनुमान, मिट्टी की सही पहचान, फसल का सटीक विश्लेषण कर किसानों को बेहतर परिणाम का आश्वासन देता है।

खेती के दौरान लागत की समस्या मुख्य रुप से किसानों के नुकसान का हिस्सा बनती है। खेती को तकनीक से जोड़ना, आय में बढ़ोतरी का सबसे बड़ा जरिया बन सकता है। एग्रो विजन के अनुसार देश का किसान ए.आई. को आधार बनाकर अपनें लागत की रकम कम कर सकता है। ए.आई. आधारित खेती पर 5000 की लागत प्रति एकड़ घटकर 3500 रुपए हो जाएगी।

भारत सरकार कृषि क्षेत्र को पूरी तरह स्मार्ट फार्मिंग में बदलने के लिए कई ए.आई आधारित योजनाओं का समर्थन कर रही है। Digital Agriculture Mission, Kisan Drone Yojna, and National e-Governance Plan in Agriculture (NeGPA). किन्तु आज की समस्या ए.आई. आधारित स्मार्ट फार्मिंग न होकर छोटे शहर के किसानों तक ए.आई. की पहुंच बनाना है। यदि आने वाले समय में भारत कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने कि दिशा में तकनीक, नवाचार, प्रशिक्षण और साधनो को गावों तक पहुंचाने की क्षमता रखता है तो ए.आई. भारतीय खेती को प्रबल रुप से उभार पाएगा।

डिजिटल क्रांति से आत्मनिर्भर बनता भारत

-आभांशु द्विवेदी

भारत के विकास में आज डिजिटल प्लेटफॉर्म का बड़ा योगदान है। तकनीक के जरिए आज लोगों का जीवन सिर्फ आसान नहीं हुआ, बल्कि उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और व्यापार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बड़ा परिवर्तन आया है। आज डिजिटल इंडिया अभियान के जरिए भारत आधुनिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है।

उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में ऑटोमेशन आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत की अर्थव्यवस्था को नई गति दे रहे हैं। जोहो जैसे भारतीय बिजनेस प्लेटफॉर्म कंपनियों को अकाउंटिंग, डेटा मैनेजमेंट और ऑफिस कार्यों को डिजिटल रूप से संचालित करने में मदद कर रहे हैं। वहीं टैली सॉल्यूशंस छोटे और बड़े व्यापारियों के लिए डिजिटल अकाउंटिंग और जीएसटी प्रबंधन को आसान बना रहा है। इन प्लेटफॉर्म्स के कारण व्यापार में पारदर्शिता, गति और कार्यक्षमता अब पहले से अधिक देखने को मिल रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल प्लेटफॉर्म एक नई क्रांति ला रहे हैं। दीक्षा और स्वयं जैसे भारतीय प्लेटफॉर्म छात्रों को ऑनलाइन पढ़ाई, वीडियो लेक्चर और अध्ययन सामग्री प्रदान कर रहे हैं, जो विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा के बराबर है। इससे दूर–दराज के क्षेत्रों के छात्रों को भी आईआईटी और आईआईएम जैसे बड़े संस्थानों के शिक्षकों से पढ़ने का अवसर मिल रहा है।

स्वास्थ्य सेवाओं में भी तकनीक का प्रभाव साफ दिखाई देता

है। प्रैक्टो और टाटा 1 एमजी जैसे प्लेटफॉर्म लोगों को ऑनलाइन डॉक्टर से सलाह लेने, दवाइयां मंगाने और मेडिकल रिपोर्ट देखने की सुविधा दे रहे हैं। वहीं आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड को सुरक्षित और आसान बना रहा है।

कृषि और व्यापार के क्षेत्र में भी डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों और छोटे व्यापारियों के लिए नई उम्मीद बनकर उभरे हैं। ई–नाम के माध्यम से किसान देश की विभिन्न मंडियों के भाव ऑनलाइन देख सकते हैं और अपनी फसल का बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। इससे बिचौलियों की मनमानी रुकती है और किसानों को उनकी मेहनत का सही दाम मिलता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म भारत को आधुनिकता, आत्मनिर्भरता और विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

यंग अचीवर्स

-पल्लवी भारद्वाज, मीडिया छात्रा

भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, जहां हर कुछ किलोमीटर पर भाषा, बोलियां, खान-पान, रहन सहन और परंपराए बदल जाती हैं। आज हम बात करेंगे कुछ ऐसे ही देश के चार यॉन्ग अचीवर्स की जिन्होंने कला, साहित्य, संगीत और संस्कृति के श्रेत्र में देश के साथ-साथ अपनी भी पहचान बनाई है। यह युवा देश के छोटे शहरों, गाँवों और पूर्वोत्तर भारत के दूरस्थ क्षेत्रों से निकलकर अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्राप्त कर रहे है।

1. **एस्थर लालदुहावमी हनाम्ते :** मिजोरम के लुंगलाई श्रेत्र

की रहने वाली यह 9 वर्षीय बालिका इतनी कम उम्र में भारत की एक नई 'सिंगिंग सेंसेशन' बन चुकी है और साथ ही इंटरनेट पर भी काफी लोकप्रिय हो गई है। एस्थर ने अपनी मधुर और शुद्ध आवाज से लोगों का ध्यान अपनी ओर तब खींचा जब उनका एक गाया हुआ वीडियो 'वन्दे मातरम' सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। उनके इसी देशभक्ति, सांस्कृतिक गीतों की प्रस्तुतियों और कला के प्रति समर्पण के लिए भारत सरकार द्वारा 2025 में कला एवं सांस्कृतिक श्रेत्र में अपने योगदान के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। यह बालिका इतनी कम उम्र में न केवल मिजो, बल्कि हिन्दी और अंग्रेजी में भी देशभक्ति से भरे, लोगों को भावुक कर देने वाले गीत गाती है। मिजोरम की यह नन्हीं कलाकार अपनी गायकी से पूरे देश को जोड़े रखने व नई पीढ़ी तक पहुंचने का अद्भुत कार्य कर रही है।

2. **संभव मिश्रा :** भारत में सबसे कम उम्र के लेखकों और

शोधकर्ताओं में गिने जाने वाले संभव मिश्रा ने मात्र 15 वर्ष की आयु में, जहां बाकी युवा अपनी स्कूली पढ़ाई तक सीमित रहते हैं, वहां इस बालक ने इतिहास और संस्कृति पर गहन शोध कर कई किताबें लिखीं और अपनी पहचान बनाई है। ओडिशा के रहने वाले संभव की सबसे प्रसिद्ध रचना "विजई भव" है, जो भारतीय इतिहास और पौराणिक कथाओं पर आधारित है। उन्हें अपनी इसी बौद्धिक और लेखन क्षमता के लिए 'प्राइड ऑफ इंडिया' और 'यन्ग ऑथर अवॉर्ड' जैसे सम्मानों से नवाजा गया है। संभव की लिखी हुई कई किताबें और शोध कार्य देश के युवाओं को पढ़ाई के प्रति प्रेरित करते हैं, साथ ही वह सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय गौरवशाली इतिहास को फैलाने और युवाओं को इससे जुड़ने के लिए प्रेरित करने का काम भी करते हैं।

3. **श्रेया भट्टाचार्य :** पुरुष प्रधान माने जाने वाले तबला

वादन के श्रेत्र में असम की इस 16 वर्षीय बालिका श्रेया भट्टाचार्य ने अपनी अद्भुत कला से पूरे देश को चकित व अपनी और अपने कला की ओर आकर्षित कर दिया है। उनको अपने इस असाधारण और अदभुद कला के लिए भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से सम्मानित भी किया गया है। इस बालिका ने मात्र 12 वर्ष की आयु में अपना नाम 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में दर्ज कराया, जिसमें उन्होंने तीनताल में विभिन लय, कायदों और रेला को 1 घंटा 2 मिनट 53 सेकंड्स तक लगातार बजा कर अपनी कला का प्रदर्शन किया। उनकी प्रस्तुतियां दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं, ऐसी ही एक प्रस्तुति श्रेया ने आगरा में आयोजित हुए G-20 समिट में दिया।

4. **प्राजल रेगमी :** भारत के उत्तरपूर्वी युवाओं के लिए

सांस्कृतिक राजदूत के रूप में उभरते हुए सिक्किम के 19 वर्षीय प्राजल रेगमी एक युवा सांस्कृतिक उद्यमी है, जो फैशन, रचनात्मक ब्रांडिंग और उद्यमिता के माध्यम से सिक्किमी के लोगों और उनकी पहचान को एक नई दिशा दे रहे हैं। उन्होंने अपनी रचनात्मकता का उपयोग सिक्किम के पारंपरिक पहनावे को आधुनिक स्वरूप देने व पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति को दुनिया तक पहुंचने में किया है। प्राजल ने 'यॉन्ग एंटरप्रेन्योरशिप' के माध्यम से पूर्वोत्तर की कला और संस्कृति को एक व्यावसायिक और वैश्विक मंच के साथ–साथ युवाओं को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का संदेश भी दिया है। उनका कार्य न सिर्फ व्यापार को बढ़ावा देने तक सीमित है, बल्कि वह उत्तर पूर्व के प्रति लोगों की धारणा को बदलने और वहां की हस्तशिल्प को बढ़ावा देने का कार्य अपनी रचनात्मकता के जरिए कर रहे हैं। प्राजल की यह सोच दर्शाती है कि आज का युवा अपनी परंपराओं और संस्कृति को आधुनिकता के साथ जोड़ कर चलता है और उसे जीवित रखता है।

जैसी होगी दृष्टि वैसी होगी सृष्टि

- अल्पना बिमल

एक बार राजा भोज की सभा में एक व्यापारी ने प्रवेश किया। राजा भोज की दृष्टि उस पर पड़ी तो उसे देखते ही अचानक उनके मन में विचार आया कि कुछ ऐसा किया जाए ताकि इस व्यापारी की सारी संपत्ति छीनकर राजकोष में जमा कर दी जाए।

व्यापारी जब तक वहां रहा, भोज का मन रह रहकर उसकी संपत्ति को हड़प लेने का करता। कुछ देर बाद व्यापारी चला गया। उसके जाने के बाद राजा को अपने राज्य के ही एक निवासी के लिए आए ऐसे विचारों के लिए बड़ा खेद होने लगा। राजा भोज ने सोचा कि मैं तो प्रजा के साथ न्यायप्रिय रहता हूं। आज मेरे मन में ऐसा कलुषित विचार क्यों आया? उन्होंने अपने मंत्री से सारी बात बताकर समाधान पूछा। मन्त्री ने कहा– इसका उत्तर देने के लिए आप मुझे कुछ समय दें, राजा मान गए।

मंत्री विलक्षण बुद्धि का था। वह इधर–उधर के सोच–विचार में समय न खोकर सीधा व्यापारी से मैत्री गाँठने पहुंचा। व्यापारी से मित्रता करने के बाद उसने पूछा– मित्र तुम चिन्तित क्यों हो? भारी मुनाफे वाले चन्दन का व्यापार करते हो, फिर चिंता कैसी?

व्यापारी बोला– मेरे पास उत्तम कोटि के चंदन का बड़ा भंडार जमा हो गया है। चंदन से भरी गाडियां लेकर अनेक शहरों के चक्कर लगाए पर नहीं बिक रहा है। बहुत धन इसमें फंसा पड़ा है, अब नुकसान से बचने का कोई उपाय नहीं है।

व्यापारी की बातें सुनकर मंत्री ने पूछा– क्या हानि से बचने का कोई उपाय नहीं? व्यापारी हंसकर कहने लगा– अगर राजा भोज की मृत्यु हो जाए तो उनके दाह–संस्कार के लिए सारा चन्दन बिक सकता है। अब तो यही अंतिम मार्ग दिखता है। व्यापारी की इस बात से मंत्री को राजा के उस प्रश्न का उत्तर मिल चुका था जो उन्होंने व्यापारी के संदर्भ में पूछा था। मंत्री ने कहा– तुम आज से प्रतिदिन राजा का भोजन पकाने के लिए चालीस किलो चन्दन राजरसोई भेज दिया करो। पैसे उसी समय मिल जाएंगे।

व्यापारी यह सुनकर बड़ा खुश हुआ, प्रतिदिन और नकद चंदन बिक्री से तो उसकी समस्या ही दूर हो जाने वाली थी। वह मन ही मन राजा के दीर्घायु होने की कामना करने लगा ताकि राजा की रसोई के लिए चंदन लंबे समय तक बेचता रहे। एक दिन राजा अपनी सभा में बैठे थे। वह व्यापारी दोबारा राजा के दर्शनों को वहां आया, उसे देखकर राजा के मन में विचार आया कि यह कितना आकर्षक व्यक्ति है, इसे कुछ पुरस्कार स्वरूप अवश्य दिया जाना चाहिए।

राजा ने मंत्री से कहा– यह व्यापारी पहली बार आया था तो उस दिन मेरे मन में कुछ बुरे भाव आए थे और मैंने तुमसे प्रश्न किया था, आज इसे देखकर मेरे मन के भाव बदल गए इसे दूसरी बार देखकर मेरे मन में इतना परिवर्तन कैसे हो गया?

मन्त्री ने उत्तर देते हुए कहा– महाराज! मैं आपके दोनों ही प्रश्नों का उत्तर आज दे रहा हूं। यह जब पहली बार आया था तब यह आपकी मृत्यु की कामना रखता था। अब यह आपके लंबे जीवन की कामना करता रहता है।

इसलिए आपके मन में इसके प्रति दो तरह की भावनाओं ने जन्म लिया है। जैसी भावना अपनी होती है, वैसा ही प्रतिबिम्ब दूसरे के मन पर पडने लगता है, यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है।

हम किसी व्यक्ति का मूल्यांकन कर रहे होते हैं तो उसके मन में उपजते भावों का उस मूल्यांकन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए जब भी किसी से मिलें तो एक सकारात्मक सोच के साथ ही मिलें।

ताकि आपके शरीर से सकारात्मक ऊर्जा निकले और वह व्यक्ति उस सकारात्मक ऊर्जा से प्रभावित होकर आसानी से आप के पक्ष में विचार करने के लिए प्रेरित हो सके।

क्योंकि जैसी दृष्टि होगी, वैसी सृष्टि होगी

बदबू, ढाल और लम्पट

– डॉ. शुचि चौहान

आज रविवार था। ऑफिस की भले छुट्टी थी, लेकिन घर के कामों की सूची बहुत लम्बी थी। जैसे तैसे समय निकाल कर रीमा अपने नए बन रहे घर के लिए गेट बनवाने निकली थी। उसके किसी सहकर्मी ने उसे बताया था कि पास में ही घुमंतू समाज की एक बस्ती है, वे लोग बहुत कुशल कारीगर होते हैं।

रीमा कार से उतरी और कच्चे रास्ते पर धीरे–धीरे चलने लगी। सामने झुग्गियों की कतार थी; टीन की छतें, फूस के छप्पर, उनके ऊपर पॉलीथिन की चादरें... लेकिन उन झुग्गियों के सामने जो था, वह नयनाभिराम था।

हर झुग्गी के बाहर लोहे के सुंदर गेट, नक्काशीदार खिड़कियां, बारीक डिजाइन की रेलिंग जैसे किसी आर्ट गैलरी में रखी कलाकृतियाँ हों। वह एक झुग्गी के सामने रुकी ही थी कि अंदर से एक दुबला–पतला किशोर बाहर आया।

"क्या चाहिए, मैडम?" रीमा ने संकोच से कहा "गेट बनवाना है।"

उसने आवाज लगाई– "अम्मा...!"

कुछ ही क्षणों में एक प्रौढ़ महिला और दो–तीन किशोरियाँ बाहर आ गईं। उनके चेहरे बेहद सुंदर थे–निखरे नैन–नक्श, चमकती आँखें, लेकिन शरीर से आती पसीने की तीखी गंध ने रीमा को असहज कर दिया। वह अधिक देर खड़ी नहीं रह सकी और फिर किसी दिन आएगी, बोल कर वापस लौट आई।

पूरे सप्ताह ऑफिस की भागदौड़ में यह बात कहीं पीछे छूट गई। इस बीच उसने शहर के कई वेंडर्स से डिजाइन और कोटेशन मंगवाए। डिजाइनें अच्छी थीं, लेकिन कीमतें बहुत अधिक थीं। आखिरकार अगले रविवार उसने फिर उसी बस्ती में जाने का निश्चय किया। इस बार उसने बैग में कुछ साबुन और शैम्पू भी रख लिए– सोचा, "थोड़ी सहायता हो जाएगी और उन्हें साफ–सफाई का महत्व भी समझाऊँगी।"

बस्ती में पहुंचकर रीमा ने गेट का डिजाइन तय किया। काम, नाप, कीमत– सब बात हो गई। फिर उसने मुस्कुराते हुए बैग से साबुन और शैम्पू निकाले और पास खड़ी किशोरियों की ओर बढ़ा दिए। "ये रख लो, और प्रतिदिन नहाया करो। साफ रहना बहुत आवश्यक होता है, बीमारियों से बचाव होता है।" – उस ने सहजता से कहा।

किशोरियाँ उसका चेहरा देखने लगीं, तभी वह प्रौढ़ महिला, जिससे गेट बनवाना तय हुआ था, धीरे से आगे आई

और रीमा का हाथ थामकर बोली– "मैडम... हम गरीब जरूर हैं, लेकिन दया के पात्र नहीं।"

रीमा ठिठक गई। महिला ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा– "हम मेहनत की कमाई खाते हैं। और आप जो प्रतिदिन नहाने और साफ रहने की बात कह रही हो... आपको क्या लगता है हम नहीं समझते?" रीमा के पास कोई उत्तर नहीं था।

महिला की आवाज अब और गहरी हो गई। "हम सड़क किनारे फुटपाथ पर रहते हैं। दिन–रात कितने ही लम्पटों की नजर हम पर होती है, हमारी बेटियों पर होती है...।"

वह कुछ पल रुकी। फिर बोली– "यह जो बदबू आपको असहनीय लग रही है न मैडम, यह हमारी ढाल है। यह हमें उन लम्पटों से बचाती है।"

समय जैसे ठहर गया। रीमा को हाथ में पकड़े साबुन और शैम्पू अचानक बहुत भारी लगने लगे। उसे लगा उसकी सारी साफ–सफाई और समझदारी एक पल में बौनी हो गई है।

उसने सामान वापस बैग में रख लिया। अब एक बार फिर उसकी दृष्टि उन गेटों पर गई, जो पहले उसे सिर्फ सुंदर लग रहे थे। अब उनमें उसे मेहनत और आत्मसम्मान की चमक भी दिख रही थी। रीमा ने साबुन और शैम्पू का बैग वहीं रख दिया और बिना कुछ कहे वापस मुड़ गई।

लेकिन इस बार उसकी चाल पहले जैसी नहीं थी, उसके कदम भारी थे और कानों में गूंज रहे थे तीन शब्द– बदबू, ढाल और लम्पट।

ज्ञान वही जो व्यवहार में काम आए

- रामकुमार शर्मा, पूर्व प्रधानाचार्य, विद्या भारती

आचार्य जी के पास कई शिष्य रहते थे। उनमें से तीन शिष्यों की विदाई का जब अवसर आया, तब आचार्य ने कहा– कल प्रातः मेरे निवास पर आना। कल तुम्हारी आखिरी परीक्षा होगी। फिर तुम्हें घर जाने की अनुमति दूंगा। आचार्य ने रात्रि में कुटिया के मार्ग पर कांटे बिखेर दिए। नियत समय पर वे तीनों शिष्य जिन्हें अंतिम परीक्षा देनी थी, गुरु के निवास की ओर चल पड़े। मार्ग में कांटे बिछे थे लेकिन शिष्य भी कच्चे न थे। कांटे हैं तो क्या हुआ? गुरु के द्वार पर जाना ही है।

ऐसा सोचकर पहला शिष्य कांटे चुभ रहे थे फिर भी कुटिया तक पहुंच गया और कुटिया के बाहर बैठ गया। दूसरा शिष्य भी कांटों से निकल आया फिर एकाध कांटा, जो चुभ गया था उसको शांति से निकाला। तीसरे शिष्य ने आकर देखा तो उसने झाड़ू ली। फिर झाड़ू से कांटे बुहार कर दूर कर दिये और हाथ–मुंह धोकर कुटिया के पास आया।

आचार्य कुटिया में से तीनों की गतिविधि देख रहे थे। जिसने कांटे हटाकर मार्ग साफ–सुथरा कर दिया था वह तीसरा शिष्य ज्यो ही आया, तो आचार्य ने कुटिया के द्वार खोले एवं कहा– 'वत्स! तुम्हारा ज्ञान व्यवहारिक हो गया है। तुम मेरी अंतिम परीक्षा में पास ह ो गए। ज्ञान वही है जो व्यवहार में काम आए। तुम्हारा ज्ञान व्यवहारिक हो गया है। तुम उत्तीर्ण हो गए हो। तुम संसार में रहोगे। फिर पहले और दूसरे शिष्य की ओर देखकर कहा– तुमको कुछ दिन और आश्रम में रहना पड़ेगा। ज्ञान प्राप्ति का मतलब केवल पढ़कर रटना नहीं, वरन् उसे व्यवहार में लाना है। गुरु से प्राप्त ज्ञान को जो व्यवहार में लाता है, उसका ज्ञान पाना सार्थक हो जाता है।

यह भारत नाम नहीं केवल

यह खण्ड नहीं जड़–भूमि का, यह शस्य–श्यामला माता है।
बलिदानों से साकार हुआ, यह देश–धर्म का नाता है।।
समझा जिसको भूमि तुमने, साकार अरे वह करुणा है।
गोदी में लाल समेटे यह, अमृत–पयस्विनी करुणा है।।
क्या मोल लगाओगे इसका सोने से, हीरे–मोती से।
मस्तक की कीमत लेती है, रणभूमि में हर रोली से।।
जिसने अरि–रक्त तिलक पाया,
वह मां का पुत्र कहलाता है।।
मत बोलो मिट्टी–मिट्टी तुम, यह शिव–मस्तक का चंदा है।
यह धरती जो अवतारों से, पाती शत्–शत् अभिनंदन है।।
इसके अणु–अणु में वीरों के लोहु से बीज अंकुरित हैं।
इसके समीर से रिपु–दल के आहत वीरों का क्रंदन है।
इसकी तृष्णा को छूकर हिम गंगाजल बन बह आता है।।
यह भारत नाम नहीं केवल, यह मंदिर है संस्कृति मां का।
यह घर वीरों की आहट का, यह घर मेधा का विधा का।।
मानवता ने इस मंदिर में, ड़गमग–ड़गमग चलना सीखा है।
दानवता से लड़ना सीखा, संबल पाकर गीता का।।
बनता याचक विश्व धर्म–मन वांछित भिक्षा पाता है।
बलिदानों से साकार हुआ, यह देश–धर्म का नाता है।।

सामग्री सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक

केशव संवाद पत्रिका वास्तव में एक प्रेरणादायक और सराहनीय प्रयास है। इसकी सामग्री ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विषयों को संतुलित एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। विशेष रूप से भारतीय आयुर्वेद, वीरांगना झलकारी बाई और सोशल मीडिया में हिंदुत्व जैसे समाचार अत्यंत रोचक और चिंतनशील हैं। पत्रिका की भाषा सरल, सहज और प्रभावशाली है, जिससे हर आयु वर्ग का पाठक आसानी से जुड़ पाता है। इस सराहनीय प्रयास हेतु पूरी टीम को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

– डॉ. सुशील शर्मा, 604, लाजपत राय रोड, प्रयागराज

पत्रिका को अधिक रंगीन बनाएं

महोदय/महोदया,

केशव संवाद का नवीन अंक अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक लगा। राममंदिर ने बदल दीं अयोध्या की अर्थव्यवस्था, भारतीय ज्ञान परंपरा, सोशल मीडिया में हिंदुत्व तथा वीरांगनाएं जैसे विषय बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं। समाचारों की भाषा सरल, सहज और विचारोत्तेजक है, जिससे हर आयु वर्ग का पाठक आसानी से जुड़ सकता है। मेरा विनम्र सुझाव है कि पत्रिका में प्रकाशित चित्रों को और अधिक रंगीन एवं आकर्षक बनाया जाए, जिससे इसकी प्रस्तुति और प्रभाव और बेहतर हो सके।

– आलोक शर्मा, एयर वाइस मार्शल (सेवानिवृत्त), बुलंदशहर

आसान है कंटेंट को समझना

पत्रिका का लेआउट साफ सुथरा, व्यवस्थित और पढ़ने में सरल है। शीर्षक और उप शीर्षक भी स्पष्ट है जिससे कंटेंट को समझना आसान हो जाता है। चित्रों का और लेख का संतुलन अच्छा है। संपादकीय पत्रिका की दिशा और उद्देश्य स्पष्ट करता है इसमें संवाद संबंधी कंटेन्ट जैसे क्विज, पाठकों की राय, रियल लाइफ स्टोरीस बढ़ाई जाएँ। बार कोड अथवा डिजिटल लिंक्स जोड़कर ऑनलाइन विस्तार बढ़ाया जा सकता है। विभिन्न माध्यमों से पाठकों को पत्रिका से अधिक से अधिक जोड़ने के लिए युवाओं के बीच में कुछ प्रतियोगिताओं का आयोजन कराया जाए।

–माही नेहरा, मीडिया छात्रा, गाजियाबाद

ग्राफिक्स एवं इंफोग्राफ का प्रयोग बढ़े

पत्रिका राष्ट्रीय विचारों और अवधारणा पर आधारित है। इससे युवा वर्ग को गंभीर जानकारी मिलती है। लेकिन पत्रिका में कलर प्रिंटिंग होनी चाहिए जिससे पढ़ने वाले को मैगजीन देखने में आकर्षक और पढ़ने में मजा आए। कवर पेज में कुछ नए प्रयोग किए जाने चाहिए। ऐसा करने से पत्रिका अधिक सुंदर दिखेगी और पाठकों का ध्यान आकर्षित कर पाएगी। इसमें जो भी पाठ्य सामग्री है, उसमें ग्राफिक्स एवं इंफोग्राफ का प्रयोग बढ़ाया जाना चाहिए।

–पल्लवी भारद्वाज, गाजियाबाद

सूचना : सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका के अध्ययन उपरांत वे इसके विषय-वस्तु, प्रस्तुति एवं कलेवर के संबंध में अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए प्रेरणा एवं मार्गदर्शन का कार्य करेगी। चयनित प्रतिक्रियाओं को 'पाठक का कोना' स्तंभ में आपके नाम सहित प्रकाशित किया जाएगा। आप अपनी प्रतिक्रिया केशव संवाद पत्रिका की ईमेल आईडी keshavsamvad@gmail.com *पर भेज सकते हैं।*

रोजगार समाचार
इंटर्नशिप एवं परीक्षा कार्यक्रम

(Employment Advertisements, Internships & Examination Schedule: 01 जून – 30 जून 2026)

~मानस वर्मा
सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र,
दिल्ली विश्वविद्यालय

क्रम संख्या (Serial No.)	प्रारंभ तिथि (Starting Date)	परीक्षा तिथि (Exam Date)	विज्ञापन / परीक्षा का नाम (Advertisement / Exam Name)	आवेदन लिंक (Official Link)
1	12 मई 2026	11 जून 2026	Coal India Limited – Management Trainee Recruitment (660 Posts)	www.coalindia.in स्कैन करें
2	–	01 जून – 12 जून 2026	Indian Army Agnipath CEE 2026	joinindianarmy.nic.in स्कैन करें
3	जून 2026	14 जून 2026	RRB Assistant Loco Pilot (ALP) Recruitment 2026	www.rrbcdg.gov.in स्कैन करें
4	जून 2026	07 जून 2026	SSB Constable Recruitment 2026	ssbrectt.gov.in स्कैन करें
5	जून 2026	04 जून 2026	RRC SECR Trade Apprentice Recruitment 2026	secr.indianrailways.gov.in स्कैन करें
6	जून 2026	08 जून 2026	AP Assistant Professor Recruitment 2026	psc.ap.gov.in स्कैन करें
7	जून 2026	19 जून 2026	Indian Air Force – Commissioned Officer Recruitment	afcat.cdac.in स्कैन करें
8	जून 2026	24 जून 2026	UPSSSC Excise Constable Recruitment 2026	upsssc.gov.in स्कैन करें
9	जून 2026	जून 2026 (विभिन्न तिथियाँ)	SSC CGL / CHSL 2026 Notification Cycle	ssc.nic.in स्कैन करें
10	जून 2026	जून 2026	State Government Summer Internship / Skill Programmes	ncs.gov.in स्कैन करें
11	जून 2026	जून 2026	University / Research Internships (Various Institutions)	employmentnews.gov.in स्कैन करें
12	–	21 जून 2026	NEET (UG) 2026 – NTA	neet.nta.nic.in स्कैन करें
13	–	22 जून – 30 जून 2026	UGC NET June 2026 – NTA	ugcnet.nta.nic.in स्कैन करें

संकलित स्रोत (Compiled Sources)

- संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) – www.upsc.gov.in
- स्टाफ चयन आयोग (SSC) – www.ssc.nic.in
- रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB) – www.rrbcdg.gov.in
- कोल इंडिया लिमिटेड – www.coalindia.in
- भारतीय सेना – joinindianarmy.nic.in
- भारतीय वायु सेना – afcat.cdac.in
- उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग – upsssc.gov.in
- राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (NTA) – www.nta.ac.in
- NEET पोर्टल – neet.nta.nic.in
- UGC NET पोर्टल – ugcnet.nta.nic.in
- रोजगार समाचार (Employment News) – employmentnews.gov.in
- संबंधित विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों की आधिकारिक वेबसाइटें

अभ्यर्थियों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

अभ्यर्थियों को सलाह दी जाती है कि आवेदन या पंजीकरण से पूर्व संबंधित विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध नवीनतम अधिसूचना एवं पात्रता शर्तों का अवलोकन अवश्य करें।

— सशक्त युवा – सशक्त भारत —

NIRALA WORLD

Nirala Gateway

Sector 12, Greater Noida (W).

RETAIL | OFFICE | STUDIO APARTMENTS

Project Id: (UPRERAPRJ531916/06/2025)
Registration Date: 17-06-2025
Promoter Name: Parth Builtech Private Limited
Promoter Id: (UPRERAPRM348231)
Website: https://www.up-rera.in/projects